वर्ष : 33 » अंक : 248 » पृष्ठ : 8 » मुंबई, रविवार, 24 नवंबर 2024 » RNI: MAHHIN/49994/91 » मूल्य : 3 रुपए » epaper.dobajedopahar.com » संपादक : अरुण लाल

DBD
पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

दो बजे दोपहर

230 सीटें भाजपा नीत गठबंधन को | **48** सीटों पर सिमटा महा विकास अघाड़ी | मंगलवार को नई सरकार का शपथ ग्रहण संभव

ऐसी जीत...

न भूतो न भविष्यति

- महायुति को महाराष्ट्र में मिली अकल्पनीय जीत, 288 में से 230 सीटों पर कब्जा
- ऐसी हार की महाराष्ट्र में नेता प्रतिपक्ष भी नहीं बना पाएगा विपक्ष

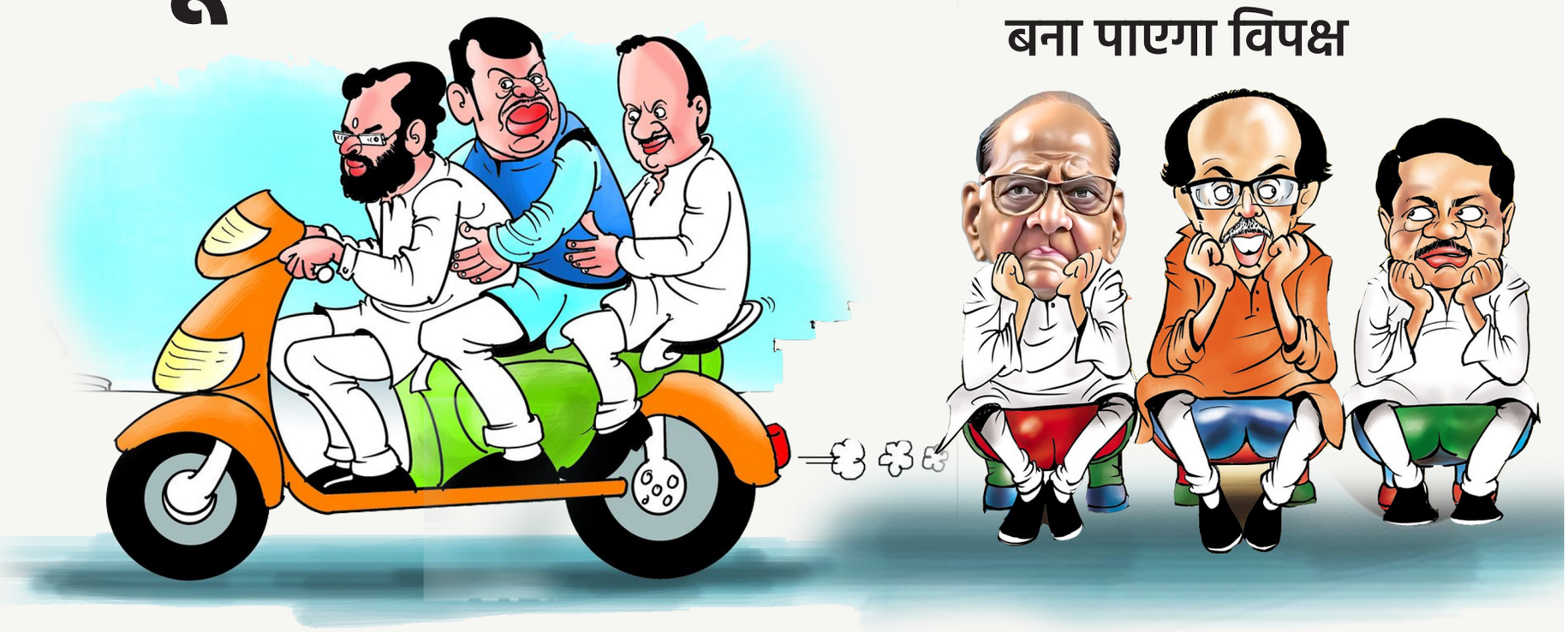

जीत की ख़ुशी

छगन भुजबलः नासिक जिले की येवला विधानसभा सीट पर एनसीपी के नेता छगन भुजबल एक बार फिर जीते हैं. उनके खिलाफ मैदान में उतरे एनसीपी (शरद पवार) के नेता माणिकराव शिंदे को पराजय का सामना करना पड़ा. माणिक शिंदे पहले छगन भुजबल के निकट सहयोगी थे. छगन भुजबल येवला सीट का प्रतिनिधित्व 15 साल से कर रहे हैं.

चंद्रशेखर बावनकुलेः महाराष्ट्र के विदर्भ की कामठी विधानसभा सीट पर चुनाव लड़े बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले का मुकाबला कांग्रेस के सुरेश भोयर से हुआ. इस सीट पर महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष की प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी.

सुधीर मुनगंटीवारः चंद्रपुर जिले की बल्लारपुर सीट पर बीजेपी के सुधीर मुनगंटीवार की मुकाबला कांग्रेस के संतोष सिंह रावत से था. मुनगंटीवार छह बार विधायक रह चुके हैं. इस चुनाव में भी उनकी जीत निश्चित हो चुकी है. वे मतगणना में लगातार आगे चल रहे हैं.

आदित्य ठाकरेः शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे के पुत्र आदित्य ठाकरे मुंबई की वर्ली विधानसभा सीट पर जीत दर्ज की है. उनके खिलाफ शिवसेना के एकनाथ शिंदे गुट के नेता मिलिंद देवड़ा चुनाव मैदान में थे. वर्ली विधानसभा सीट पर चुनावी लड़ाई बहुत रोचक थी.

दिलीप वलसे पाटिलः अंबेगांव विधानसभा सीट पर अजित पवार के एनसीपी के गुट के नेता दिलीप वलसे पाटिल का मुकाबला एनसीपी (शरद पवार) के नेता देवदत्त निकम से हुआ. पाटिल का अंबेगांव से लगातार 7 बार जीतने का रिकॉर्ड था, जो अब लगातार 8 चुनाव जीतने का रिकॉर्ड बन गया है. दिलीप वलसे पाटिल अब तक कोई चुनाव नहीं हारे.

धनंजय मुंडेः बीजेपी के दिग्गज नेता स्वर्गीय गोपीनाथ मुंडे के गढ़ परली विधानसभा सीट पर उनके भतीजे और एनसीपी के उम्मीदवार धनंजय मुंडे विजयी हुए हैं. इस सीट पर एनसीपी के ही दोनों गुटों के बीच मुकाबला था. एनसीपी (शरद पवार) ने धनंजय के खिलाफ राजासाहेब देशमुख को चुनाव मैदान में उतारा था.

रोहित पवारः अहमदनगर जिले की कर्जत जामखेड़ विधानसभा सीट पर शरद पवार के पोते रोहित पवार जीत गए हैं. उनके खिलाफ बीजेपी के राम शिंदे चुनाव मैदान में थे. राम शिंदे कैबिनेट मंत्री रहे हैं. साल 2019 के चुनाव में रोहित पवार ने पहली बार इस सीट पर जीत दर्ज की थी.

श्रीजया चव्हाणः नांदेड़ जिले की भोकर विधानसभा सीट पर बीजेपी की श्रीजया चव्हाण जीत गई हैं. वे नांदेड़ क्षेत्र के चव्हाण राजनीतिक घराने में तीसरी पीढ़ी की नेता हैं. यह उनका पहला चुनाव है. उनका मुकाबला कांग्रेस की तिरुपति कोंधेकर से था. सन 2019 के चुनाव में यहां कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी.

नीलेश राणेः कुडाल विधानसभा सीट पर शिवसेना के नीलेश राणे चुनाव जीत गए हैं. पूर्व मुख्यमंत्री नारायण राणे के पुत्र नीलेश का मुकाबला शिवसेना (यूबीटी) के वैभव नाइक से था. साल 2019 के चुनाव में अविभाजित शिवसेना के वैभव नाइक ने जीत हासिल की थी.

चंद्रकांत पाटिलः कोथरूड विधानसभा सीट पर बीजेपी के वरिष्ठ नेता चंद्रकांत पाटिल ने जीत हासिल की है. उन्होंने शिवसेना (यूबीटी) के चंद्रकांत मोकटे को पराजित कर दिया. बीजेपी के नेता और मंत्री चंद्रकांत पाटिल मूल रूप से कोल्हापुर जिले के हैं. वे अब पुणे जिले में अपनी नई राजनीतिक जमीन बनाना चाहते हैं.

> महायुति सरकार ने राज्य में जो काम किया है, उसका तोहफा आज राज्य की जनता ने हमें दिया है। यह बीते चार दशकों की सबसे शानदार जीत है। ऐसी जीत... न भूतो न भविष्यति, ना पहले कभी हुई है और ना कभी होगी।
>
> **एकनाथ शिंदे, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री सीएम**

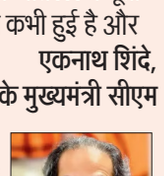

> जो नतीजे आये है उस पर विश्वास नहीं हो रहा है। कोविड-19 के दौरान जिस महाराष्ट्र की जनता ने परिवार के मुखिया के रूप में मेरी बात सुनी, वह मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगी, इसकी उम्मीद नहीं थी।
>
> **उद्धव ठाकरे, शिवसेना (UBT) प्रमुख**

एमवीए का खराब प्रदर्शन

एमवीए गठबंधन की शिवसेना (यूबीटी) राज्य में 20 सीटों के साथ चौथे नंबर की पार्टी बनी। इसके बाद इसी गठबंधन की कांग्रेस 15 और एनसीपी शरद गुट 10 सीटों के साथ चौथे और पांचवें नंबर की पार्टी बनी है।

अमित बृज/धीरज सिंह । मुंबई

महाराष्ट्र में महायुति फिर से सरकार बनाने जा रही है। महायुति को 230 सीटों पर जीत हासिल हुई है। भाजपा ने 132, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) ने 57 और NCP (अजित पवार) ने 41 सीटें जीतीं। वहीं, कांग्रेस के नेतृत्व वाला महा विकास अघाड़ी (MVA) 46 सीटों पर सिमट गया। शिवसेना (उद्धव) 20, कांग्रेस 16 और NCP (शरद पवार) के हिस्से 10 सीटें आईं। 2 सीटें सपा ने जीती हैं। 10 सीटें अन्य के खाते में गईं। मुख्यमंत्री शिंदे और देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि तीनों पार्टी मिलकर तय करेंगी कि राज्य का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा। इससे पहले फडणवीस ने सोशल मीडिया पर लिखा था- एक हैं तो सेफ हैं। महायुति में बीजेपी, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) शामिल है, जबकि महाविकास अघाड़ी में कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव ठाकरे) और एनसीपी (शरद पवार) है। महाराष्ट्र विधानसभा की 288 सीटों पर 20 नवंबर को वोटिंग हुई थी। 2019 के मुकाबले इस बार 4% ज्यादा वोटिंग हुई। 2019 में 61.4% वोट पड़े थे।

आकलन से भी ज्यादा बड़ी सफलता

महाराष्ट्र के नतीजे भाजपा के लिए भी चौंकाने वाले हैं। पार्टी नेतृत्व लगभग 175 सीटों का आकलन करके चल रहा था, लेकिन यह सवा दो सौ से भी आगे निकल गया। इस भारी भरकम जीत से पार्टी ने लोकसभा चुनाव में लगे झटकों से तो मुक्ति पा ली है। वहीं, विरोधी खेमे को भी बड़ा झटका दिया है। शरद पवार और उद्धव ठाकरे की भावी राजनीति के लिए यह नतीजे सवाल खड़े करने वाले हैं। साथ ही विपक्षी गठबंधन की कमजोरियों को भी उजागर करते हैं।

शरद पवार और उद्धव ठाकरे को सबसे ज्यादा झटका

महाराष्ट्र के नतीजों से सबसे निराशाजनक संकेत अगर किसी के लिए निकले हैं तो वह एनसीपी के संस्थापक व राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार व शिवसेना यूबीटी के मुखिया उद्धव ठाकरे के लिए हैं। लगभग ढाई साल पहले हुई इन दोनों की पार्टियों की टूट ने न सिर्फ एमवीए से सत्ता छीन ली, बल्कि दोनों से उनकी पार्टी, सिंबल से लेकर जमीन तक छीनने का काम किया। शनिवार को आए नतीजों ने इन दोनों से उम्मीद की वो किरण भी छीन ली।

नेता प्रतिपक्ष भी नहीं बना पाएगा विपक्ष

150 से 165 सीटों तक जीतने का दावा करने वाला पूरा विपक्ष 50 का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाया। विधानसभा में विपक्ष के नेता के पद पर दावा करने वाली पार्टी को कुल सीटों में 10 प्रतिशत सीटों पर जीत दर्ज करना अनिवार्य है। अर्थात पार्टी के अपने 29 विधायक होना अनिवार्य है। लेकिन विपक्ष में शामिल कोई भी राजनीतिक दल निर्धारित 29 सीटों के आंकड़े तक पहुंचने में सफल नहीं हो सका है।

हार का गम

बालासाहेब थोरातः महाराष्ट्र के कांग्रेस के दिग्गज नेता बाला साहेब थोरात संगमनेर से 8 बार विधायक रह चुके हैं. उन्होंने 9वीं बार चुनाव लड़ा लेकिन अब उनका विजय रथ थम गया है. उनका मुकाबला शिवसेना के एकनाथ शिंदे के गुट के अमोल खाटल से था. उनकी हार कांग्रेस के लिए बड़ा झटका है.

नाना पटोले- इस लिस्ट में सबसे चौंकाने वाला नाम कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले का भी है। साकोली विधानसभा सीट से नाना पटोले को बीजेपी के अविनाश ब्रह्मानकर चुनाव में मात दे दी है। हालांकि इस सीट पर रिकाउंटिंग की खबर भी सामने आ रही है। इसलिस चुनाव आयोग ने अब तक विजेता की घोषणा नहीं की है।

पृथ्वीराज चव्हाण- महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता पृथ्वीराज चव्हाण कराड दक्षिण विधानसभा सीट से चुनाव हार गए हैं। पृथ्वीराज चव्हाण को बीजेपी के अतुलबाबा भोसले ने 39355 वोटों के अंतर से हराया है।

नवाब मलिक- शिवाजी मानखुर्द सीट से एनसीपी के कद्दावर नेता नवाब मलिक को करारी शिकस्त मिली है। वे चौथे स्थान पर रहे। नवाब मलिक शिवाजी मानखुर्द सीट से सपा उम्मीदवार अबू आजमी ने हराया है।

धीरज देशमुख- महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख के बेटे और अभिनेता रितेश देशमुख के भाई धीरज देशमुख भी चुनाव हार गए। धीरज देशमुख को लातूर ग्रामीण विधानसभा सीट से बीजेपी के रमेश काशीराम कराड ने 6595 वोटों से हराया।

शाइना एनसी- मुंबादेवी विधानसभा सीट से शिवसेना की शाइना एनसी को भी हार सामना करना पड़ा है। शाइना एनसी को कांग्रेस प्रत्याशी अमीन पटेल ने 35505 वोटों के अंतर से हराया।

जयश्री पाटिल- राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री वसंत दादा पाटिल की परिवारिक सदस्य जयश्री पाटिल भी सांगली से चुनाव हार गई हैं। जयश्री को भाजपा के सुधीरदादा गाडगिल ने हराया है। जयश्री पाटिल इस चुनाव में तीसरे नंबर रही।

अमित ठाकरे- माहिम विधानसभा सीट से राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे को भी करारी हार का सामना करना पड़ा है। अमित ठाकरे को शिवसेना (यूबीटी) के नेता महेश सावंत ने हराया है। अमित ठाकरे विजयी प्रत्याशी महेश सावंत से 17151 वोटों से पीछे रहे।

युगेंद्र पवार- शरद पवार के पोते युगेंद्र पवार भी चुनाव हार गए हैं। उन्हें चाचा अजित पवार ने बारामती विधानसभा सीट से 1 लाख 899 वोटों के अंतर से हराया है। युगेंद्र पवार को 80233 वोट मिले।

फहाद अहमद- अणुशक्ति नगर विधानसभा सीट से स्वरा भास्कर के पति फहाद अहमद विधायक बनने से चूक गए। फहाद अहमद को अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी की प्रत्याशी सना मलिक ने हराया है। सना मलिक एनसीपी नेता नवाब मलिक की बेटी हैं।

जीशान सिद्दीकी- पूर्व एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी को जनता की सहानुभूति नहीं मिल पाई। जीशान वांद्रे ईस्ट विधानसभा सीट से शिवसेना (यूबीटी) नेता वरुण सरदेसाई से हार गए।

सत्ता के सिपहसालार

देवेंद्र फडणवीस ने लगाया जीत का चौका

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता देवेंद्र फडणवीस नागपुर दक्षिण पश्चिम सीट से जीत गये हैं। उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी एवं कांग्रेस उम्मीदवार प्रफुल्ल गुडाधे पाटिल को 39,710 मतों के अंतर से हराया है। फडणवीस को कुल 1,29,401 वोट मिले, जबकि पाटिल को 89,691 वोट मिले। 2019 के चुनाव में उन्होंने इससे अधिक मतों के अंतर के साथ जीत हासिल की थी। इस चुनाव में उनकी जीत का अंतर पिछले चुनाव के मुकाबले 9,643 मत कम है। फडणवीस ने नागपुर दक्षिण पश्चिम सीट पर लगातार चौथी बार जीत दर्ज की है। इस जीत के साथ ही वे विधानसभा चुनाव के लिए छठी बार चुनाव जीते हैं। इससे पहले फडणवीस साल 1999 और 2004 में नागपुर पश्चिम सीट से चुनाव जीत चुके हैं। नागपुर में कांग्रेस और भाजपा दोनों का प्रभुत्व रहा है। लेकिन नागपुर दक्षिण-पश्चिम सीट अस्तित्व में आने के बाद से ही यह फडणवीस का गढ़ बन गया।

महाराष्ट्र में एमवीए की हार के पांच कारण

1. घटक दालों में एकजुटता और आपसी समन्वय का अभाव रहा
2. अपने चुनावी वादों को आम मतदाताओं तक पहुंचाने में विफल रहे
3. कृषि और किसानों से जुड़े मुद्दों पर ज्यादा जोर नहीं दिया
4. संविधान की रक्षा और जाति आधारित आरक्षण देने की वकालत करते रहे
5. कमजोर उम्मीदवारों को मैदान में उतारा। बागियों को मनाने में विफल रहे

महायुति की जीत के पांच कारण

1. उम्मीदवारों को लेकर सहमति और नापसंद के बावजूद गठबंधन में पूरा सहयोग रहा
2. मुख्यमंत्री पद को लेकर गठबंधन में रही एक राय, चुनाव बाद ही नाम तय करने पर एकमत
3. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जमीन पर ठोस काम किया। कई महीनों से कर रहे थे जनसंपर्क
4. मुख्य रणनीतिकारों ने राज्य के नेताओं को हरदम आगे रखा
5. क्षेत्रवार रणनीति बनाकर किया काम। उसी के अनुसार उम्मीदवारों का भी चयन किया गया

चाचा पर भरी पड़ा भतीजा

एनसीपी के दोनों गुटों की सबसे बड़ी परीक्षा बारामती सीट पर हुई। डिप्टी सीएम अजित पवार यहां से लगातार आठवीं बार चुनाव लड़ रहे थे और उनका मुकाबला एनसीपी (शरद पवार गुट) के युगेंद्र पवार से था। युगेंद्र, अजित पवार के भतीजे और शरद पवार के पोते हैं। हालांकि, इस सीट पर अजित पवार ने भारी जीत दर्ज की। यह बात यहां गौर करने वाली है कि यह सीट 1967 से पवार परिवार के कब्जे में है और हमेशा से शरद पवार गुट के लिए एक गौरव रही है। वहीं लोकसभा चुनाव में इसी सीट से शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले ने अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार को हराया था। लेकिन विधानसभा चुनाव में अजित पवार की जीत ने यह साबित कर दिया कि सिंबल और संगठन शक्ति के दम पर असली एनसीपी का दावा उन्हीं का है।

शिवसेना का मतलब अब सिर्फ ब्रांड ठाकरे नहीं

शिवसेना के दोनों गुटों के बीच सबसे दिलचस्प मुकाबला कोपरी-पचपाखड़ी सीट पर हुआ, जहां मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अपने गुरु आनंद दिघे के भतीजे केदार दिघे को हराया। शिंदे गुट के पास शिवसेना का नाम और धनुष-बाण का चुनाव चिह्न है, जबकि ठाकरे गुट मशाल के साथ मैदान में था। इस चुनाव में डेढ़ दर्जन सीटों पर सीधा मुकाबला ठाकरे और शिंदे गुट की शिवसेना के बीच हुआ। नतीजों ने साफ कर दिया कि जनता के लिए 'शिवसेना' का मतलब अब सिर्फ ब्रांड ठाकरे नहीं रहा। शिंदे गुट ने अधिक सीटें जीतकर यह दिखा दिया कि असली लड़ाई संगठन और सिंबल के दम पर होती है।

DBD दो बजे दोपहर
पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

न्यूज ब्रीफ

अतिरिक्त रैक सहित आज़ाद हिंद एक्सप्रेस हुई रवाना

पुणे। हावड़ा से पुणे आनेवाली 12130 आज़ाद हिंद एक्सप्रेस करीब 25 घंटे देरी से चल रही है, उसके पुणे पहुंचने का समय दिनांक 23.11.24 को सुबह 07.05 पर था, किंतु अपरिहार्य कारणवश देरी से चल रही है। 12129 आज़ाद हिंद एक्सप्रेस का पुणे से हावड़ा जाने वाली ट्रेन का निर्धारित समय शाम 6.35 बजे है। पुणे मंडल ने फिर से अतिरिक्त रैक का उपयोग कर इस ट्रेन को दिनांक 23.11.24 को पुणे से निर्धारित समय पर रवाना किया जाएगा।

एकनाथ शिंदे की आंधी में उड़े बालासाहेब थोराट

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजें विपक्षी गठबंधन महा विकास अघाड़ी के लिए बेहद निराशाजनक रहे। महाराष्ट्र में 288 विधानसभा सीटों पर हुए चुनाव में एमवीए 50 का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई। इस बार राज्य में भाजपा और महायुति की आंधी चली इसमें विपक्ष के कई बड़े नेता ढेर हो गए। इसी में एक नाम कांग्रेस के कद्दावर नेता बालासाहेब थोराट का भी है। जिन्होंने 8 बार लगातार जीत हासिल की थी, लेकिन नवीं बार अपना करिश्मा दोहरा नहीं सके। संगमनेर विधानसभा सीट से आठ बार के विधायक बालासाहेब थोराट को इस बार करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के प्रत्याशी अमोल खताल ने थोराट को 10 हजार 560 वोटों से हरा दिया है। चुनाव से पहले माना जा रहा था कि यदि महा विकास अघाड़ी को बहुमत मिलता है तो कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में बालासाहेब थोराट मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार थे। कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ और ज्यादा बार जीतने वाले विधायक के तौर पर उन्हें इस पद का दावेदार माना जा रहा था।

राणे बंधुओं का कोंकण क्षेत्र में दबदबा, लहराया विजय का परचम

सिंधुदुर्ग। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कई दिग्गज नेताओं के बच्चे भी मैदान में उतरे थे। कई जगहों पर चाचा-भतीजे, पिता-पुत्र, भाई-भाई के बीच मुकाबला था। इस वजह से इन नेताओं ने अपनी ओर सभी का ध्यान खींचा। सिंधुदुर्ग जिले में तीन निर्वाचन क्षेत्रों के नतीजे घोषित हो चुके हैं। कुडल निर्वाचन क्षेत्र में नीलेश राणे ने वैभव नाइक को करीबी मुकाबले में हराया, जबकि कंकावली से नितेश राणे ने जीत हासिल की। साथ ही सावंतवाड़ी निर्वाचन क्षेत्र से शिवसेना के दीपक केसरकर ने जीत हासिल की। मुंबई में ठाकरे बंधुओं और कोंकण में राणे बंधुओं की चुनावी लड़ाई पर भी राज्य का ध्यान गया। इस साल कोंकण में नितेश राणे और नीलेश राणे चुनाव मैदान में उतरे थे। भाजपा के नितेश राणे कंकावली से चुनाव लड़ रहे थे, जबकि शिवसेना के नीलेश राणे कुडाल से चुनाव लड़ रहे थे। दोनों भाइयों ने जीत दर्ज की है। जीत के नितेश राणे ने कहा, ₹मैं पहले दिन से ही कह रहा था कि कंकावली, देवगढ़, वैभववाड़ी के लोगों ने मुझे तीसरी बार सेवा का मौका देने का फैसला किया है। 262 गांवों का दौरा करने के दौरान मुझे इसका अहसास हो गया था। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा सांसद नारायण राणे के दोनों बेटे इस साल अपने राजनीतिक भविष्य को दांव पर लगाकर चुनाव मैदान में थे।

भिवंडी पूर्व विधानसभा क्षेत्र से रईस शेख की शानदार जीत

डीबीडी संवाददाता । भिवंडी

महाराष्ट्र विधानसभा आम चुनाव के लिए वोटों की गिनती आज पूरी हो गई। जिसमें रईस शेख ने भिवंडी पूर्व विधानसभा क्षेत्र से दूसरी बार जीत हासिल की और अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी शिवसेना (एकनाथ शिंदे समूह) के उम्मीदवार संतोष शेट्टी को 60 हजार से अधिक वोटों से हराया। पिछले पांच वर्षों में रईस शेख ने भिवंडी पूर्व विधानसभा क्षेत्र में जो विकास कार्य किये, जनता ने उन पर फिर से भरोसा किया और वे भारी बहुमत से सफल हुए। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यहां के गैबी नगर में लड़कियों के लिए एक डिजिटल स्कूल का निर्माण है, जो पूरे महाराष्ट्र का पहला डिजिटल स्कूल माना जा रहा है।

भिवंडी पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार महेश चोगले ने लगाई जीत की हैट्रिक

महेश चोगले बने तीसरी बार विधायक

भिवंडी पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में मुस्लिम वोटों के घालमेल के कारण भाजपा प्रत्याशी महेश चोगले तीसरी बार विधानसभा सदस्य चुने गए हैं। उन्होंने अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार रियाज आजमी को 31215 वोटों से हराया है। यहां निर्दलीय उम्मीदवार विलास पाटिल तीसरे और कांग्रेस उम्मीदवार दयानंद चोरघे चौथे स्थान पर रहे।

ठाणे में महायुति का लहराया परचम

भाजपा 9, शिवसेना 6, राष्ट्रवादी व सपा को एक-एक जगह

धर्मेंद्र उपाध्याय । ठाणे

राज्य में महायुती या महाविकास आघाडी की सत्ता को लेकर चल रहा रस्सा कस्सी में महायुति ने बाजी मारी। शनिवार को चल रहे ठाणे विधानसभा चुनाव के 18 सीटों पर महायुति ने 16 सीटों पर किया कब्जा। वहीं उद्धव ठाकरे पक्ष का खाता नहीं खुला। ठाणे शहर, भिवंडी पश्चिम, कल्याण पूर्व, डोंबिवली, बेलापुर, ऐरोली, मुरबाड, उल्हासनगर, मीरा भायंदर सीटें जीत ली हैं जबकि एनसीपी अजीत दादा पक्ष ने शाहपुर और एनसीपी शरद चंद्र पवार समूह ने फिर से मुंब्रा कलवा सीट जीत ली है। भिवंडी पूर्व से समाजवादी ने अपना गढ़ बरकरार रखा है।

1 लाख 20 हजार 717 मत से एकनाथ शिंदे विजयी घोषित

ठाणे कोपरी पाचपखाड़ी विधानसभा चुनाव क्षेत्र से मुख्यमंत्री एकनाथ संभाजी शिंदे को कुल 159060 मिला। उद्धव ठाकरे पक्ष के केदार प्रकाश दिघे को 38343 मत मिला। 120717 मत से एकनाथ शिंदे विजयी घोषित हुए।148 ठाणे शहर विधानसभा चुनाव क्षेत्र से भाजपा के संजय मुकुंद केलकर को 120373 मत मिला वही उद्धव ठाकरे पक्ष के राजन बाबूराव विचारे को 62120 मत मिला 58253 मत से संजय केलकर विजयी घोषित हुए। 149 कलवा मुंब्रा विधानसभा चुनाव क्षेत्र से जितेंद्र सतीश आव्हाड को कुल 157141 मिला वहीं राकपा नजीब मुल्ला को 60913 मत मिला। 96228 मत से जितेंद्र आव्हाड विजयी घोषित हुए।

भाजपा और महायुति ने मनाया जीत का जश्न

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

महाराष्ट्र के चुनावों में महायुति की प्रचंड जीत हुई है। बीजेपी गठबंधन 236 सीटों जीत हासिल की हैं। इस बीच मुंबई के भाजपा कार्यालय में 'एक हैं तो सेफ हैं' का पोस्टर लगा है। गौरतलब है कि इस नारे ने बीजेपी को जीत दिलाने में काफी अहम भूमिका निभाई है। शनिवार को सुबह 8 बजे जब नतीजे सामने आने शुरू हुए, उसी समय से बीजेपी गठबंधन ने बढ़त बनाई हुई थी। ये सिलसिला लगातार आगे बढ़ता गया, जिसका नतीजा ये हुआ कि बीजेपी गठबंधन 236 सीटें और कांग्रेस गठबंधन 49 सीटों पर सिमट गया। महाराष्ट्र में महायुति की प्रचंड जीत पर मुंबई भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने खुशी जताई। अलग-अलग स्थानों पर आतिशबाजी एवं मिठाई बांटकर जश्न मनाया। सुबह से पार्टी कार्यालय में कार्यकर्ताओं का आना शुरू हो गया था। वहीं दूसरी ओर मुंबई के कांग्रेस, एनसीपी (शरदचंद्र पवार) और शिवसेना (यूबीटी) के कार्यालय में सन्नाटा पसरा है। तीनों पार्टियों के कार्यालयों में कार्यकर्ताओं की कोई हलचल देखने को नहीं मिली। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति की बंपर जीत के जश्न में उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी शामिल हुए।

स्क्रैप गोदामों में लगी भीषण आग

आग से कोई जनहानि की खबर नहीं

डीबीडी संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी शहर के नागांव इलाके के फातमा नगर में शाम के समय कागज के कबाड़ के गोदाम में अचानक आग लग गई, इस जगह पर कबाड़ के सभी गोदामों में घनी दुकानें भरी हुई हैं और बड़ी मात्रा में कार्डबोर्ड, प्लास्टिक और कपड़े का कबाड़ जमा है। आग लगने का कारण अभी भी स्पष्ट नहीं है और चूंकि आग एक झुग्गी बस्ती के पास लगी थी, इसलिए निवासी सुरक्षा के लिए वहां से निकल कर बाहर भाग गए थे। इसी जगह पर करीब 15 गोदाम हैं और यह दूसरी बार है जब वहां आग लगने की यह घटना हुई है। सूचना मिलने के बाद भिवंडी फायर ब्रिगेड की एक गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने में कामयाब हुईऔर आग बुझाई गई। सौभाग्य से इस आग में कोई जनहानि नहीं हुई।

धुले में महायुति का लहराया परचम

भाजपा के 2 उम्मीदवारों ने जिले को किया भगवामय

धुले। जिल्हे में महायुति ने पांच में से पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में निर्विवाद बहुमत हासिल कर भगवा फहराया है। धुलिया ग्रामीण विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में कांग्रेस की एकमात्र सीट को भी भाजपा ने हासिल कर लिया और कांग्रेस को जिले से निकाल बाहर कर दिया। शिरपूर, धुलिया शहर, शिंदखेडा, साक्री और धुलिया ग्रामीण में रोमांचक मुकाबला हुआ। इनमें से धुलिया शहर और धुलिया ग्रामीण की लड़ाई विशेष रूप से रोमांचक थी। साक्री विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में भी महायुति की उम्मीदवार मंजूला गावित ने जीत हासिल की। धुलिया ग्रामीण में कांग्रेस के वित्रमान विधायक कुणाल पाटील को हराकर महायुति के भाजपा उम्मीदवार राघवेंद्र उर्फ राम भदाणे ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है। धुलिया शहर में अनुप अग्रवाल ने बड़े मतों के अंतर से जीत हासिल की है।

शिंदखेडा और शिरपुर भाजपा के खाते में

जिले में शिंदखेडा और शिरपूर दो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र भारतीय जनता पार्टी के गढ़ बन गए हैं। शिरपूर में पूर्व मंत्री और विधायक अमरिशभाई पटेल का राजनीतिक प्रभाव है और आदिवासी आरक्षित सीट होने के कारण, अमरिशभाई पटेल के कट्टर समर्थक काशिराम पावरा ने यहां से चुनाव लड़ा था। काशिराम पावरा ने 2009 और 2014 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीता था, लेकिन 2019 से पहले अमरिश पटेल के नेतृत्व में भाजपा में शामिल हो गए। तब से वे विधायक हैं। इस बार भी उन्हें महायुति के माध्यम से भाजपा की उम्मीदवारी मिली और वे फिर से विधायक बन गए हैं। उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी महाविकास आघाड़ी के उम्मीदवार और निर्दलीय उम्मीदवार जितेंद्र ठाकूर को उन्होंने बड़े अंतर से हराया। काशिराम पावरा को 1 लाख 76 हजार 516 वोट मिले, जबकि जितेंद्र ठाकूर को 31 हजार 806 वोट मिले। काशिराम पावरा 1 लाख 45 हजार 944 वोटों से विजयी हुए हैं।

कुणाल को राम ने हराया

धुलिया ग्रामीण विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुणाल पाटील, पूर्व मंत्री रोहिदास पाटील के पुत्र, ने 2014 के चुनाव में भाग लिया था, जब देश भर में मोदी लहर थी। इसके बावजूद, वह जिले के 5 में से एकमात्र कांग्रेस विधायक के रूप में राज्य भर में प्रसिद्ध हुए। इसके कारण, कांग्रेस नेताओं ने उन्हें महाआघाडी के रूप में इस बार फिर से उम्मीदवारी दी। कुणाल पाटील के पिता रोहिदास पाटील ने विधानसभा में 6 बार प्रतिनिधित्व किया था। उन्हें कृषि और राजस्व विभाग के मंत्री के रूप में उत्कृष्ट विधानसभा सदस्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। लंबे समय तक रोहिदास पाटील का प्रभाव इस निर्वाचन क्षेत्र पर बना रहा, जिससे यह संपूर्ण महाराष्ट्र में कांग्रेस का गढ बन गया था। लेकिन, इस बार कुणाल पाटील को महायुति के उम्मीदवार राम भदाणे के सामने पराजय का सामना करना पड़ा। भारतीय जनता पार्टी ने राम भदाणे को उम्मीदवारी दी थी।

अनुप अग्रवार से हारे फारूक शाह और अनिल गोटे

धुलिया शहर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के अनुप अग्रवाल ने 21वें राउंड में एक लाख 15 हजार 125 वोटों के साथ एक महत्वपूर्ण जीत हासिल की। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी एआईएमआईएम के शाह फरूक अनवर को 70 हजार 289 वोट मिले, जबकि उद्धव बालासाहेब ठाकरे की शिवसेना से अनिल गोटे को 23 हजार 496 वोट मिले। अनुप अग्रवाल की जीत का अंतर 44 हजार 836 वोटों का था।

एक बार फिर कुमार आयलानी बने विधायक

सभी शहर वासियों व लाडली बहनों का आभार : कुमार आयलानी

डीबीडी संवाददाता । उल्हासनगर

एक बार फिर शहर की जनता ने कुमार आयलानी पर अपना विश्वास कायम रखा और कुमार आयलानी की लोकप्रियता इस बात से साबित होती है कि पहले राउंड की गिनती शुरू होने से लेकर अंत तक कोई उन्हें छू नहीं सका। विपक्ष की तमाम कोशिशें नाकाम होने के बावजूद शहर की जनता ने उन्हें दोबारा विजयी बनाने के लिए भारी मतदान किया। विजय की खबर लगते ही उनके दफ्तर में खुशी का माहौल हो गया। अंतिम परिणाम आने से पहले ही कार्यालय में बधाइयों का तांता लग गया।

उल्हासनगर शहर में मतदान प्रतिशत बढ़ने पर कुमार आयलानी ने शहर के सभी मतदाताओं विशेषकर अपनी प्रिय बहनों और युवा मतदाताओं को धन्यवाद दिया।

कुमार आयलानी 30754 मतों से विजयी हुए। उन्हें कुल 82231 मत मिले।मतदान के दिन विधायक कार्यालय के बाहर पप्पू कालानी का दुर्व्यवहार उनके लिए घातक साबित हुआ क्योंकि बाद में डाले गए वोट पूरी तरह से कुमार आयलानी के पक्ष में गए। शहर के लोगों को गुंडागर्दी पसंद नहीं है। विपक्ष की हार की खबर से तुतारी और उद्धव सेना में निराशा होने के साथ ही सोशल मीडिया पर भी निराशा साफ झलक रही थी।

कुमार आयलानी की साफ-सुथरी छवि ने मतदाताओं को आकर्षित किया और उन्हें फिर से शहर का विधायक चुना। चुनाव के दिन शांत रहने के कारण लोगों ने उन्हें पसंद किया। विकास कार्यों के प्रति उनकी जागरूकता, लाडली बहन योजना के साथ जनता के लिए हमेशा उपलब्ध रहने ने कुमार आयलानी को भारी जनसमर्थन के साथ एक बार फिर शहर विधायक बना दिया है। विधायक कुमार आयलानी जैसे ही मतदान केंद्र से अपने कार्यालय पहुंचे तो उनका जयकारों के साथ स्वागत किया गया, जबकि उनके समर्थक डीजे की धुन पर 'जय जय श्री राम' के गाने पर नाचते नजर आए। बीजेपी, शिवसेना, एनसीपी और अन्य सहयोगी पार्टियों के लोग विधायक को बधाई देने उनके दफ्तर पहुंचे और यह सिलसिला देर शाम तक जारी रहा।कुमार आयलानी की अभूतपूर्व जीत से जहां विपक्ष हैरान है, वहीं शहर में झूठा प्रचार कर एग्जिट पोल दिखाने वाले बुरी तरह फेल हो गए।

राहत | धारावी को विश्वस्तरीय जिले के रूप में पुनर्विकसित किया जा रहा है

अदाणी ग्रुप की 3 अरब डॉलर की धारावी परियोजना रद्द होने से बची

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ भाजपा और शिव सेना (एकनाथ शिंदे) की महायुति की भारी जीत से अरबपति गौतम अदाणी के नेतृत्व वाले समूह की तीन अरब डॉलर की धारावी परियोजना को बड़ी राहत मिली है। ऐसा इसलिए क्योंकि विपक्षी दल उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) ने सत्ता में आने पर इस परियोजना को रद्दे करने की बात कही थी। अदाणी ग्रुप की इस परियोजना के तहत मुंबई की झुग्गी बस्ती धारावी को विश्वस्तरीय जिले के रूप में पुनर्विकसित किया जा रहा है। धारावी को एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती माना जाता है। चुनावों के दौरान शिवसेना (यूबीटी) ने जनता से वादा किया था कि वे इस परियोजना के लिए अदाणी समूह को दी गई सारी जमीन वापस ले लेंगे और इस परियोजना को भी पूरी तरह से रद्द कर देंगे। विपक्षी गठबंधन महायुति और भाजपा पर लगातार अदाणी ग्रुप को फायदा पहुंचाने के लिए काम करने का आरोप लगा चुका है।

अब रद्द नहीं होगी धारावी परियोजना

अमेरिकी अदालत में रिश्वतखोरी के आरोपों का सामना कर रहे अदाणी के लिए उनकी पसंदीदा धारावी परियोजना को रद्द करना एक बड़ा झटका होता। फिलहाल चुनावी नतीजों से इस परियोजना पर लगे बादल छट गए हैं। चुनाव नतीजों के अनुसार, भाजपा और उसके सहयोगी दल शिवसेना शिंदे और अजीत पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने महाराष्ट्र विधानसभा की 288 सीटों में से तीन-चौथाई से अधिक सीटें जीत ली हैं, जिससे अब ये चिंताएं शांत हो गई हैं।

सात लाख लोगों को मिलेंगे फ्लैट

अदाणी की योजना धारावी की 620 एकड़ की शानदार ज़मीन को एक शानदार शहरी केंद्र में बदलने की है। यह जमीन न्यूयॉर्क के सेंट्रल पार्क के आकार का लगभग तीन चौथाई है। धारावी मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नज़दीक घनी आबादी वाली झुग्गी बस्ती है। इस परियोजना के तहत यहां खुले सीवर और साझा शौचालयों वाली जर्जर झुग्गियों में रहने वाले लगभग सात लाख लोगों को 350 वर्ग फुट तक के फ़्लैट मुफ़्त दिए जाने हैं।

कांग्रेस लगाती रही है आरोप

धारावी पुनर्विकास का यह मामला राजनीतिक रूप से तब गरमा गया था, जब विपक्ष ने आरोप लगाया था कि अदाणी ग्रुप को अनुबंध देने में राज्य सरकार से अनुचित लाभ मिला है। हालांकि अदाणी ग्रुप ने सरकार के पक्षपात से लाभ उठाने से इनकार किया है। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी बार-बार धारावी पुनर्विकास परियोजना के मुद्दे को उठाते रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी पार्टी भाजपा पर अदाणी जैसे मित्रों को समृद्ध करने का' आरोप लगाया है।

महायुति धारावी परियोजना की समर्थक

सत्तारूढ़ दल इस परियोजना का समर्थन करती रही है। उनका कहना है कि यह परियोजना झुग्गी पुनर्विकास के लिए एक वैश्विक मॉडल बनने के लिए तैयार है। बता दें कि धारावी में लगभग 10 लाख लोग रहते हैं, लेकिन इस योजना के तहत लगभग 7 लाख लोगों को ही पात्र माना गया है। निवासी परिभाषा के अनुसार, एक जनवरी, 2000 से पहले इस क्षेत्र में रहने का प्रमाण होना चाहिए। हालांकि, बाकी लोगों को शहर के दूसरे इलाकों में घर मिलेंगे। इस प्रस्ताव का कुछ स्थानीय लोगों ने विरोध भी किया क्योंकि वे चाहते हैं कि किसी भी निवासी या व्यवसाय के मालिक को बेघर न किया जाए।

DBD
पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

दो बजे दोपहर

महाराष्ट्र में महाविजय

कोंकण और विदर्भ में भाजपा ने खुद को मजबूत किया

पश्चिम महाराष्ट्र में शरद पवार की एनसीपी की ताकत घटी

कांग्रेस को तमाम क्षेत्रों में बड़ा नुकसान

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

चुनाव दो राज्यों के थे और दोनों जगह जंग गठबंधनों में थी, लेकिन भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधव को जहां महाराष्ट्र में महाविजय मिली वहीं, झारखंड में झटका लगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सभी बड़े नेताओं ने दोनों राज्यों में जमकर प्रचार किया, लेकिन राज्यों के नेतृत्व और रणनीतिकारों के प्रबंधन कौशल में अंतर रहा। सामाजिक समीकरण साधने में भी जहां महाराष्ट्र में पार्टी ने बेहतर तालमेल दिखाया, वहीं झारखंड में आदिवासी और गैर आदिवासी समुदाय के बीच वह सही तारतम्य नहीं बिठा सकी। महाराष्ट्र की महाविजय ने झारखंड की हार के गम को कम किया है लेकिन, भाजपा नेतृत्व ने इसे गंभीरता से लिया है। भाजपा के लिए महाराष्ट्र में झारखंड से ज्यादा बड़ी चुनौती थी। वहां पर लोकसभा चुनाव में उसे बड़ा झटका लगा था और विपक्ष में राज्य की राजनीति के चाणक्य शरद पवार और बाला साहब ठाकरे के विरासत वाले उद्धव ठाकरे के साथ कांग्रेस थी। ऐसे में भाजपा को अपने गठबंधन महायुति में आए शिवसेना और एनसीपी के टूटे धड़ों को साधना था, साथ ही उनकी सीटों की मांग और उम्मीदवारों को लेकर विवाद का समाधान भी करना था। पार्टी ने यहां पर मध्य प्रदेश की भारी जीत का सूत्रधार रही प्रभारियों की टीम के केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और अश्विनी वैष्णव को लगाया था। दोनों ने मीडिया में बयानों के बजाय सीटों के प्रबंधन को लेकर पार्टी और सहयोगियों के साथ सही तारतम्य बिठाने में जोर दिया। उन्होंने विपक्ष के हमलों का जबाब राज्य के नेताओं से दिलवाया। उनकी टीम ने पीछे रहकर अपना काम किया। इससे राज्य के नेताओं और कार्यकर्ताओं में विश्वास जगा और वह मोर्चे पर आगे भी रहे। चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक है तो सेफ है का नारा देकर यूपी के मुख्यमंत्री योगी के नारे को लेकर विपक्षी हमलों की तीखी धार को भोथरा भी किया। आइये जानते हैं कि 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में क्षेत्रवार नतीजे कैसे आए हैं? 2019 के क्षेत्रवार नतीजे कैसे थे? किस क्षेत्र में किसे ज्यादा सीटें आईं और किसे कहां झटका लगा?

राज्य में क्षेत्रवार नतीजे कैसे हैं?

पश्चिमी महाराष्ट्र में घटी पवार की पावर

सीटों के लिहाज से पश्चिमी महाराष्ट्र क्षेत्र सबसे अहम माना जाता है। राज्य की कुल विधानसभा सीटों में से एक चौथाई पश्चिमी महाराष्ट्र से आती हैं। यानी 288 में से 58 सीटें पश्चिमी महाराष्ट्र क्षेत्र की हैं। ये सीटें कोल्हापुर, सांगली, सतारा, पुणे और सोलापुर जिले की हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और अविभाजित राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी भारी रही। 2019 के चुनाव में पश्चिमी महाराष्ट्र की कुल 58 सीटों में से शरद पवार के नेतृत्व में एनसीपी ने सबसे ज्यादा 21 सीटें जीती थीं। इस बार शरद पवार के नेतृत्व में एनसीपी को महज 7 सीटें आई हैं, जबकि उनसे अलग हुए अजित पवार गुट को 11 सीटें आई हैं। भाजपा ने 17 सीटें हासिल की थीं जो इस बार बढ़कर 24 सीटें हो गई हैं। कांग्रेस को पश्चिमी महाराष्ट्र में इस बार महज 1 सीट आई है, जबकि पिछली बार पार्टी के 10 विधायक यहां से जीते थे।

पार्टी	2019	2024
भाजपा	17	24
शिवसेना	05	07
एनसीपी	21	11
कांग्रेस	10	01
शिवसेना (यूबीटी)	--	02
एनसीपी (शपा)	--	07
अन्य	01	06
निर्दलीय	04	00

कोंकण में भगवा लहर और मजबूत हुई

पार्टी	2019	2024
भाजपा	27	31
शिवसेना	29	22
एनसीपी	06	04
कांग्रेस	04	03
शिवसेना (यूबीटी)	--	11
एनसीपी (शपा)	--	01
अन्य	07	03
निर्दलीय	02	00

कोंकण क्षेत्र 75 विधायक चुनकर विधानसभा में भेजता है। कोंकण में पालघर, ठाणे, मुंबई उपनगर, मुंबई शहर, रायगढ़, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिले आते हैं। इस क्षेत्र भाजपा-शिवसेना अपना गढ़ बरकरार रखने में सफल रही है। मुंबई और कोंकण क्षेत्र की 75 सीटों में से भाजपा ने सबसे ज्यादा 31 सीटें जीती हैं जो पिछली बार 27 पर थीं। पिछली बार उद्धव के नेतृत्व में शिवसेना को 29 सीटें आई थीं जो इस बार घटकर 11 सीटों पर आ गई है। एकनाथ शिंदे की पार्टी को 22 सीटें आई हैं। एनसीपी ने 6, कांग्रेस ने 4 सीटें जीती थीं जो इस बार क्रमशः 4-3 हो गई हैं। इसके अलावा अन्य को 3 सीट मिली हैं।

विदर्भ में फिर सब पर भारी भाजपा

पार्टी	2019	2024
भाजपा	29	38
शिवसेना	04	04
एनसीपी	06	06
कांग्रेस	15	09
शिवसेना (यूबीटी)	--	04
एनसीपी (शपा)	--	00
अन्य	03	01
निर्दलीय	05	00

यह इलाका भी राजनीतिक नजरिए से पार्टियों का भाग्य तय करने में अहम भूमिका निभाता है। विदर्भ में 11 जिले आते हैं, जिनमें अकोला, अमरावती, भंडारा, बुलढाणा, चंद्रपुर, गढ़चिरौली, गोंदिया, नागपुर, वर्धा, वाशिम और यवतमाल शामिल हैं। 2019 के चुनाव में विदर्भ की कुल 62 सीटों में से भाजपा ने सर्वाधिक 29 सीटें जीती थीं जो इस बार बढ़कर 38 हो गई हैं। कांग्रेस की 15 सीटें थीं जो घटकर 9 हो गई हैं। शरद पवार ने 6 सीटें जीती थीं लेकिन इस बार कोई सीट नहीं मिली है। उद्धव वाली शिवसेना ने 4 सीटें जीती थीं और इस बार भी अपना आंकड़ा बरकरार रखा है। वहीं शिंदे सेना ने 4 सीटें हासिल की हैं।

मराठवाड़ा में भाजपा-कांग्रेस दोनों को नुकसान

पार्टी	2019	2024
भाजपा	16	19
शिवसेना	12	13
एनसीपी	08	08
कांग्रेस	08	01
शिवसेना (यूबीटी)	--	03
एनसीपी (शपा)	--	01
अन्य	02	01

महाराष्ट्र का यह क्षेत्र चौथा बड़ा क्षेत्र हैं, जहां से 46 विधायक चुनकर आते हैं। मराठवाड़ा में औरंगाबाद, बीड, हिंगोली, जालना, लातूर, नांदेड़, उस्मानाबाद और परभनी जिले आते हैं। 2024 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के सबसे अधिक 19 विधायक जीते हैं जबकि पिछली बार यह आंकड़ा 16 था। वहीं उद्धव ठाकरे की शिवसेना को 12 सीटें मिली थीं जबकि इस बार 3 सीटें आई हैं। एकनाथ शिंदे ने यहां 13 सीटें जीती हैं। कांग्रेस को 8 सीटें मिली थीं जबकि इस बार 1 पर ही सिमट गई है। इसके अलावा 1 अन्य विधायक चुनकर आया है।

उत्तर महाराष्ट्र में उद्धव सेना जीरो, शिंदे बढ़े

सीटों के लिहाज से यह महाराष्ट्र का सबसे छोटा क्षेत्र है लेकिन पार्टियों की कोशिश रहती है कि यहां से अधिक से अधिक सीटें हासिल की जाएं। उत्तरी महाराष्ट्र में अहमदनगर, धुले, जलगांव, नंदुरबार और नासिक जिले पड़ते हैं। इस क्षेत्र में कुल 47 विधानसभा सीटें हैं। 2019 में इस क्षेत्र की कुल 47 सीटों में से भाजपा ने सबसे ज्यादा 16 सीटें हासिल की थीं जबकि इस बार आंकड़ा 20 हो गया है। शरद पवार की एनसीपी ने 13 सीटें जीती थीं जबकि इस बार 1 सीट पर आ गई। अजित पवार की पार्टी को 12 सीटें आई हैं। कांग्रेस ने 7 सीटें जीती थीं और इस बार यह 2 पर है। उद्धव के नेतृत्व में शिवसेना का आंकड़ा 6 से घटकर 0 हो गया है। वहीं एकनाथ शिंदे के 11 विधायक जीतकर आए हैं। 1 सीट पर अन्य को सफलता मिली है।

पार्टी	2019	2024
भाजपा	16	20
शिवसेना	06	11
एनसीपी	13	12
कांग्रेस	07	02
शिवसेना (यूबीटी)	--	00
एनसीपी (शपा)	--	01
अन्य	03	01
निर्दलीय	02	00

मुंबई में भी महायुति की आंधी

मुंबईकरों ने भर दी फडणवीस की झोली

शिंदे और उद्धव का मुकाबला बराबरी पर छूटा

मंबई। महाराष्ट्र चुनाव में मुंबईकरों ने भी महायुति की आंधी का साथ दिया। मुंबई की 36 सीटों में से 24 पर महायुति के उम्मीदवार जीत की ओर बढ़ रहे हैं। महाविकास अघाड़ी के खाते में सिर्फ 12 सीटें आई हैं। शिंदे की शिवसेना और उद्धव सेना ने मुंबई में 8-8 सीटें जीतकर बराबरी का मुकाबला किया। बीजेपी ने 16 सीटों पर कब्जा किया जबकि कांग्रेस को सिर्फ 3 सीटें मिलीं। जीतने वालों में सना मलिक, आदित्य ठाकरे, संजय राउत के भाई सुनील राउत, बीजेपी नेता आशीष शेलार, राम कदम , मंगल प्रभात लोढ़ा और विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर रहे।

हारने वालों में बड़े नेताओं के लाडले भी

हारने वालों में स्वरा भास्कर के पति फहद अहमद, बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी, सदा सरवणकर, मिलंद देवड़ा, राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे, शाइना एन सी और संगीता वाजे प्रमुख हैं। बीजेपी और महायुति की आंधी में अणुशक्ति नगर से अजित पवार की कैंडिडेट सना मलिक ने जीत हासिल की है। माहिम सीट से राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे को पहले चुनाव में हार का मुंह देखना पड़ा। वह तीसरे स्थान पर रहे। वर्ली से उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे जीतने में सफल रहे, मगर उनके जीत का अंतर 70 हजार के कम होकर करीब 9 हजार हो गया।

धारावी में कांग्रेस का कब्जा बरकरार

मुंबई की धारावी सीट पर कांग्रेस को जीत मिली है। कांग्रेस कैंडिडेट डॉ. ज्योति गायकवाड़ ने 23459 वोटों से जीत हासिल की है।

जोगेश्वरी पूर्व से हारीं मनीषा वायकर

मुंबई की जोगेश्वरी पूर्व सीट पर बड़ा उलटफेर हो गया है। शिवसेना के रविंद्र वायकर के कब्जे में रही इस सीट पर उनकी पत्नी मनीषा वायकर चुनाव हार गई हैं। महाविकास अघाड़ी की तरफ से उद्धव ठाकरे की शिवसेना यूबीटी से अनंत बी नर ने कड़े मुकाबले में जीत दर्ज की है। अनंत बी नर को कुल 77044 वोट मिले। उन्होंने मनीषा वायकर को 1541 वोट से हरा दिया। एकनाथ शिंदे की शिवसेना की उम्मीदवार मनीषा वायकर को कुल 75503 वोट मिले। वह दूसरे नंबर पर रहीं। इसके अलावा मनसे के भालचंद्र अंबुर को 12805 वोट मिले और वह तीसरे नंबर पर रहे।

दिंडोशी सीट से जीते सुनील प्रभु

दिंडोशी विधानसभा सीट पर बड़ा उलटफेर हो गया है। शिवसेना यूबीटी के उम्मीदवार सुनील प्रभु ने कांटे के मुकाबले में जीत दर्ज की है। सुनील प्रभु ने छह हजार वोटों से चुनाव जीता है। उन्हें अब तक कुल 76437 वोट मिले हैं। वहीं शिवसेना उम्मीदवार संजय निरुपम को 70255 वोट मिले हैं और वह दूसरे नंबर पर हैं। इसके अलावा मनसे के उम्मीदवार भास्कर परब को 20309 वोट मिले हैं और वह तीसरे नंबर पर हैं।

विशेष टिप्पणी

समंदर बनकर लौट तो आए फडणवीस, पर किनारे घर बना चुके एकनाथ शिंदे का क्या होगा ?

मुंबई। मी पुन्हा येईं यानी मैं फिर आऊंगा। इस नारे के साथ देवेंद्र फडणवीस ने महाराष्ट्र में पिछला विधानसभा चुनाव लड़ा था। उसके बाद भाजपा 105 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी लेकिन तत्कालीन संयुक्त शिवसेना ने मुख्यमंत्री पद के बिना भाजपा के साथ सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया और फडणवीस को अपने राजनीतिक करियर का पहला बड़ा झटका लगा। इसके बाद फडणवीस ने एनसीपी नेता अजित पवार के साथ वैकल्पिक गठबंधन की तलाश की और सरकार बनाई। हालांकि, यह सरकार मात्र 80 घंटे में गिर गई और उद्धव ठाकरे कांग्रेस तथा एनसीपी के समर्थन से 28 नवंबर 2019 को सीएम बने।

पांच साल बाद खत्म होगा मलाल?

उसी समय बीजेपी नेता और पूर्व सीएम देवेंद्र फडणवीस ने महाराष्ट्र विधानसभा में कहा था, 'मेरा पानी उतरता देख, मेरे किनारे पर घर मत बसा लेना। मैं समंदर हूं, लौटकर वापस आऊंगा!' जाहिर है जब उन्होंने यह बात कही थी तो उनके मन कहीं न कहीं इसका मलाल था कि दूसरी बार महाराष्ट्र का सीएम बनने के बाद तुरंत ही इस्तीफा देना पड़ा था। अब महाराष्ट्र में महायुति की प्रचंड जीत के साथ ही फडणवीस 'समंदर' बनकर लौटे हैं, लेकिन देखना यह है कि महज तीन दिनों में सीएम पद गंवाने का मलाल क्या पांच साल बाद खत्म होगा।

शिंदे दावा छोड़ने को तैयार नहीं

यह सवाल इसलिए भी वाजिब है क्योंकि महायुति को पूर्ण बहुमत मिलते ही एकनाथ शिंदे ने मजबूती से मुख्यमंत्री पद पर दावेदारी ठोक दी है। शिंदे हथियार डालते नजर नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा है, 'मुख्यमंत्री कौन बनेगा, यह एनडीए की बैठक में तय किया जाएगा

बीजेपी अपने बूते बहुमत के करीब

खबर लिखे जाने तक बीजेपी अकेले 131 सीटों पर आगे चल रही थी और सहयोगी पार्टियों में शिवसेना (शिंदे गुट) 55 सीटों पर तथा एनसीपी 41 सीटों पर आगे चल रही थी। 288 सदस्यों वाली विधानसभा में बीजेपी अपने बूते बहुमत से मात्र 13 सीट पीछे है। बीजेपी के अप्रत्याशित स्ट्राइक रेट के बाद पार्टी में देवेंद्र फडणवीस को सीएम बनाए जाने की मांग उठने लगी है, जो अगले कुछ घंटों में मुखर होगी। पार्टी नेतृत्व के लिए इसे दरकिनार करना आसान नहीं होगा।

महिला केंद्रित योजनाएं महाराष्ट्र और झारखंड में साबित हुईं गेमचेंजर

मुंबई। महिलाएं एक बार फिर महाराष्ट्र और झारखंड चुनावों में गेमचेंजर साबित हुई हैं। दो राज्यों के चुनाव नतीजों से साफ हो गया है कि महिलाओं के हाथ में ही अब सत्ता की असल चाभी है। वे उन दलों पर जमकर वोट का प्यार लुटा रही हैं, जो उनकी चिंता करता दिख रहा है। नकद योजनाओं का प्रत्यक्ष लाभ चुनाव में बढ़त का स्थापित फॉर्मूला बनता जा रहा है।

लड़की बहन योजना का जादू जमकर चला

महाराष्ट्र की सियासी नब्ज समझने वालों का मानना है कि चुनाव के ठीक पहले महाराष्ट्र में मध्य प्रदेश की लाडली बहन जैसा फॉर्मूला अपनाकर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने सियासी हवा का रुख बदल दिया। लोकसभा चुनावों में जो बढ़त महाविकास अघाड़ी को मिली थी वह विधानसभा चुनावों में महायुति की सटीक रणनीति के आगे ढेर हो गई। जानकारों का कहना है कि महाराष्ट्र में लड़की बहन योजना का जादू जमकर चला। इसने हर वर्ग तक महायुति को पहुंचा दिया। यह योजना चुनाव के ठीक पहले मूर्त रूप में आ चुकी थी। इससे महिलाओं का भरोसा पक्का हो गया कि यह केवल चुनावी वादा भर नहीं है। योजना के तहत हर परिवार की महिला मुखिया को प्रतिमाह 1500 रुपये मिल रहे हैं। चुनाव के पहले सरकार ने इसे बढ़ाकर 2500 रुपये करने का ऐलान कर दिया।

झारखंड में 'मइयां' ने दिया हेमंत को वरदान

झारखंड में भी यही देखने को मिला। वहां मइयां सम्मान योजना ने सोरेन सरकार की जड़ों को मजबूत बनाए रखा। सहानुभूति के फैक्टर में यह योजना सरप्लस बन गई। इस योजना के तहत महिलाओं को राज्य सरकार एक हजार रुपये प्रतिमाह दे रही है।

दो निर्दलीय जीते, पिछली बार 13 थे

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में दो निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है, जबकि निवर्तमान विधानसभा में 13 निर्दलीय विधायक थे। इस बार शरददादा सोनवणे पुणे जिले की जुन्नार सीट से विजयी हुए, जबकि शिवाजी शत्तुपा पाटिल कोल्हापुर के चांगड़ से जीते। इस बार के चुनाव में कुल 4,136 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें से 2,086 निर्दलीय थे।

मध्य रेल

E-Tender Notice No. DRM-W-PA-E-Tend-2024-N-28 dtd. 21.11.2024.

मंडल रेल प्रबंधक (कार्य), पुणे निम्न कार्य के लिये खुली ई निविदा आमंत्रित करते हैं। ADEN/M/पुणे के तहत पुणे में, ताडीवाला रोड, डीजल कॉलोनी, पुणे स्टेशन आदि पर पोर्टेबल पेयजल (पीएमसी पानी) की आपूर्ती। **लागत-** 1,20,47,910/- **बोली सुरक्षा-** 2,10,,200/- **समापन अवधी -** 12 माह, **बंद होने की तिथी व समय -** 17.12.2024 को 15.15 बजे तक । विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट **www.ireps.gov.in** पर जाये।

टिकट के लिये UTS APP डाउनलोड करे PA-30

मध्य रेल

आर्टिकुलेटेड स्फेरोइलास्टिक रबर बेयरिंग एम / एस सैनरोक को डीआरजी बनाएं।

निविदा संख्या: 85246737 ; **विवरण:** आर्टिकुलेटेड स्फ़ेरोइलास्टिक रबर बेयरिंग एम / एस सैनरोक को डीआरजी बनाएं। नंबर 1 ईडी 1023, आरडीएसओ विशिष्टता संख्या । आरडीएसओ/2011/सीजी - 03, रेव. -01. **मात्रा:** 300 NOS. **खोलने के लिए नियत तारीख:** 18/12/24 ; **निविदा मूल्य:** 13657320.00 ; मध्य रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर निविदा का पूरा विवरण उपलब्ध है, वेबसाइट से सम्पूर्ण दस्तावेज डाउनलोड किए जा सकते हैं.

निविदा नोटिस संख्या: CWE /MTN / 85246737/2024

Download UTS App for Tickets 565

DBD दो बजे दोपहर
पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

संपादकीय

ज़हरीली प्राणवायु

राजधानी दिल्ली व एनसीआर में अनियंत्रित वायु प्रदूषण को लेकर देश की शीर्ष अदालत ने दिल्ली सरकार व पुलिस को फिर फटकार लगायी है। कोर्ट ने नाराजगी जतायी कि वायु गुणवत्ता की बेहद गंभीर स्थिति होने पर सुधार हेतु ग्रैप-4 लागू करने में कोताही बरती जा रही है। कोर्ट ने दिल्ली सरकार व पुलिस को आड़े हाथों लिया कि क्यों रोक के बावजूद दिल्ली में भारी वाहनों का प्रवेश जारी है। कोर्ट ने दिल्ली में भारी वाहनों के प्रवेश की निगरानी को तेरह वकीलों को नियुक्त किया, जो सोमवार को अपनी रिपोर्ट देंगे। कोर्ट ने दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली हरियाणा व उत्तर प्रदेश सरकारों को सख्ती से ग्रैप-4 की व्यवस्था लागू करने को कहा। अदालत का कहना था कि सभी राज्यों का दायित्व है कि नागरिकों को प्रदूषण मुक्त वातावरण उपलब्ध कराया जाए। दरअसल, न्यायमूर्ति अभय एस.ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने ग्रैप-4 व्यवस्था लागू करने की खामियों पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता है कि दिल्ली में भारी वाहनों का प्रवेश रोक दिया गया है। अदालत ने केंद्र सरकार से दिल्ली में प्रवेश के 113 स्थानों पर निगरानी के लिये पुलिस कर्मियों की तैनाती को कहा, इनमें प्रवेश के तेरह मार्ग ट्रकों के लिये हैं। दरअसल, अदालत ने दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आने वाले राज्य हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश सरकारों को 18 नवंबर को निर्देश दिया था कि ग्रैप-4 के तहत प्रतिबंधों के क्रियान्वयन के लिये तुरंत टीम गठित की जाए। कोर्ट ने सख्ती से पाबंदियां लागू न किये जाने पर नाराजगी जतायी। उल्लेखनीय है कि इस सप्ताह की शुरुआत में वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई के गंभीर से अधिक के स्तर पर पहुंचने पर ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान-4 लागू किया गया था। जिसके अंतर्गत ट्रकों व भारी वाहनों के दिल्ली में प्रवेश व सार्वजनिक निर्माण पर अस्थायी रोक लगा दी गई थी। प्रश्न है कि क्यों हमारी सरकार जन-स्वास्थ्य से जुड़े मामलों में तब तक सोयी रहती है, जब तक कि पानी सिर के ऊपर से न गुजरने लगे। क्यों हर साल शीर्ष अदालत को सरकार, पुलिस व पर्यावरण संरक्षण हेतु बनी संस्थाओं को नींद से जगाना पड़ता है? क्यों अदालत पहले आदेश दे और फिर उसके क्रियान्वयन की निगरानी करे? क्यों सरकारें आग लगने पर कुंआ खोदने की फितरत से बाज नहीं आती। अदालत ने कहा कि हर नागरिक को स्वच्छ हवा देना सरकारों का दायित्व है तो क्या सरकारें जिम्मेदारी निभा रही हैं? सर्दी की दस्तक देते ही हर साल अक्तूबर-नवंबर में प्रदूषण संकट पैदा होता है, फिर भी सारे साल प्रदूषण को काबू करने के उपया क्यों नहीं किए जाते? क्यों प्रदूषण संकट गंभीर स्थिति में पहुंचने के बाद सरकारें हाथ-पैर मारना शुरू करती हैं? कल्पना कीजिए श्वसनतंत्र व दमा जैसे रोगों से ग्रस्त लोग इस भयावह प्रदूषण संकट से कैसे जूझ रहे होंगे? विडंबना ही कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसे परिवेश-पर्यावरण छोड़ेंगे। सवाल हवा का ही नहीं, पानी पर भी बड़ा संकट है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों की एक टीम ने नासा व जर्मनी के उपग्रहों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर चिंता बढ़ाने वाला खुलासा किया कि वर्ष 2014 के बाद से स्वच्छ जल के स्तर पर अप्रत्याशित गिरावट देखी गई है। निश्चित रूप से इस स्थिति के लिये हम सब सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। पानी के अंधाधुंध उपयोग, वन क्षेत्रफल का संकुचन और इंसान की अंतहीन लिप्साओं व वाहनों के दबाव ने धरती का जैसे तापमान बढ़ाया है, उसने पानी की वाष्पन की गति तेज कर दी है। साथ ही ग्लोबल वार्मिंग के चलते बारिश के पैटर्न में भी तीव्र बदलाव आया है। बहुत अधिक पानी बहुत कम समय में बरसता है और तुरंत बह जाता है। जिससे धरती की जल ग्रहण क्षमता कम होती जा रही है। पिछले एक दशक में तीस बड़े सूखे दर्ज हुए हैं। वहीं हमारी भौतिक लिप्साओं व औद्योगिक अपशिष्ट ने शुद्ध जल के स्रोतों मसलन नदियों व झीलों को भी प्रदूषित कर दिया है। यह इंसान के लिये जागने का वक्त है।

जन स्वास्थ्य पर सुपरबग का घातक संकट

सौ साल से भी कम समय पहले, एंटीबायोटिक्स की खोज ने एक ऐसे युग की शुरुआत की जिसने चिकित्सा की दुनिया को बदल दिया। इसने लाखों लोगों की जान बचाई, जटिल सर्जरी के विकास और उपयोग में तेज़ी लाई और कैंसर जैसी बीमारियों के बेहतर प्रबंधन में मदद की। सर्वव्यापी जीवाणुओं को नष्ट करने की एंटीबायोटिक्स की क्षमता ने उन्हें 'जादुई गोलियों' की उपाधि दी। दुर्भाग्य से, यह उत्साह लंबे समय तक नहीं टिका। मनुष्यों ने रोगाणुओं की जीवटता और जीवित रहने की चतुराई को कम करके आंका क्योंकि उन्होंने एंटीबायोटिक्स के प्रभाव को बेअसर करने के लिए अपनी खुद की प्रतिरोधकता विकसित कर ली। इसके बूते रोगाणु एंटीबायोटिक्स के असर से बच निकलने के काबिल बन गए, जिसे तकनीकी रूप से एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (एएमआर) कहा जाता है। दरअसल, मानव स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा सेवाओं और कृषि में एंटीबायोटिक्स के अंधाधुंध उपयोग ने कुछ रोगाणुओं की ऐसी जमात बना दी जिस पर एक या कई एंटीबायोटिक्स का कोई असर नहीं हो पा रहा। कुछेक ने तो लगभग सभी किफायती एंटीबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लिया है। इन्हें 'सुपरबग्स' के नाम से जाना जाता है। प्रतिरोध विकसित कर चुके रोगाणुओं से होने वाले संक्रमण का इलाज करना मुश्किल

राजेश भाटिया

होता है, इससे अस्पताल में लंबे समय तक रहना पड़ता है, मृत्यु दर और रुग्णता बढ़ती है। आर्थिक नुकसान भी होता है। यह चुनौती पूरी दुनिया को प्रभावित कर रही है। वैश्विक स्तर पर एएमआर के निहितार्थ बहुत बड़े हैं, जो मानव विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। एएमआर पर बरती निष्क्रियता के चलते अनुमान है कि यदि कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई तो 2050 तक लगभग 1 करोड़ लोग हर साल एंटीबायोटिक्स के विरुद्ध पनपे प्रतिरोधी रोगाणुओं के कारण होने वाली बीमारियों से मर जाएंगे। यह संख्या सड़क दुर्घटनाओं और कैंसर से मरने वालों की कुल संख्या से भी अधिक होगी। इस कालखंड में, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 3.5 प्रतिशत की कमी आएगी। इससे 100 ट्रिलियन डॉलर का सकल वित्तीय नुकसान होने का अनुमान है। पशुधन उत्पादन में 7.5 प्रतिशत की कमी आएगी, जिससे वैश्विक खाद्य सुरक्षा प्रभावित होगी। अतिरिक्त 2.8 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे चले जाएंगे और 2050 तक वैश्विक निर्यात में 3.8 प्रतिशत की कमी आएगी। एएमआर का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है और विकासशील देशों में यह कहीं अधिक है। वर्ष 2019 में ही प्रतिरोधी रोगाणुओं की वजह से हुई बीमारियों के कारण 12 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। अनुमान है कि वर्ष 2019 में केवल भारत में ही एएमआर के कारण 2,97,000 मौतें हुईं वहीं इससे संबंधित जटिलताओं के चलते 10,42,500 मौतें हुईं। भारत में एएमआर से होने वाली मौतों की संख्या कैंसर, श्वसन-संक्रमण एवं तपेदिक, आंतों के संक्रमण, मधुमेह और गुर्दे की बीमारियों और मातृ एवं नवजात विकारों से होने वाली मौतों से अधिक है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने माना कि सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति पर इस स्थिति का प्रभाव पड़ेगा। 2016 और 2024 में अपनी उच्च स्तरीय बैठकों के माध्यम से, यूएनजीए ने 2019 को आधार वर्ष मानकर 2030 तक प्रतिरोधी रोगाणुओं के कारण होने वाली मृत्यु दर को 10 प्रतिशत तक कम करने के लिए तत्काल, वैश्विक रूप से समन्वित राष्ट्रीय कार्रवाई का आह्वान किया है। आर्थिक सहयोग के लिए अंतर-सरकारी मंचों की हाल की बैठकों, अर्थात् जी-20 (भारत, 2023) और जी-7 (इटली, 2024) बैठकों में एएमआर से निपटने के महत्व को दृढ़ता से व्यक्त किया गया है। पशु चिकित्सा क्षेत्र में भी संक्रमण का उपचार अथवा इसकी रोकथाम के लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है। कई बार इनका इस्तेमाल इस लक्ष्य के साथ किया जाता है कि इनके उपयोग से पशु के शरीर का आकार (मांस) बढ़ेगा, जिससे कि ज्यादा आर्थिक लाभ मिलेगा। अनेक देशों में रोक के बावजूद जागरूकता की कमी और गरीबी के कारण यह भारत में जारी है। पशुओं में एंटीबायोटिक्स का ऐसा अंधाधुंध उपयोग उनके अंदर प्रतिरोधी जीवाणुओं व रोगाणुओं के फैलाव को बढ़ावा देता है। चंडीगढ़ के पीजीआईएमईआर द्वारा हाल ही में चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और उत्तराखंड से आए दस्त के मरीजों के अध्ययन से पता चला है कि रोग की वजह ऐसे रोगाणु हैं जिन्होंने कई एंटीबायोटिक दवाओं के खिलाफ एएमआर विकसित कर ली। भारत में मांसाहार की लगातार बढ़ती मांग के साथ पशुधन स्वास्थ्य क्षेत्र में एंटीबायोटिक का उपयोग और अधिक होता गया, लिहाजा खाद्य-शृंखला के जरिए उनमें बना एएमआर मनुष्यों में स्थानांतरित होता गया। जिससे कि उनके अंदर भी सिप्रोफ्लोसिन, एम्पीसिलीन, टेट्रासाइक्लिन और तीसरी पीढ़ी के सेफ्लोस्पोरिन के खिलाफ उन रोगाणुओं के विरुद्ध उच्च एएमआर बनता देखा जा रहा है। फलतः इलाज मुश्किल हो जाता है। हालांकि, एएमआर की समस्या राजनीतिक, वित्तीय, कार्यक्रम संबंधी, तकनीकी, विनियामक और बहु-क्षेत्रीय रूप से ध्यान खींच रही है, लेकिन इसे रोकने के वैश्विक प्रयासों में जनता की भूमिका भी एक प्रमुख हितधारक के रूप में है। सभी क्षेत्रों के एंटीबायोटिक्स लिखकर देने वाले डॉक्टर और उपयोगकर्ताओं को एएमआर के छिपे खतरे को समझना चाहिए। किफायती एंटीबायोटिक दवाओं के अभाव में, एक छोटी-सी चोट भी घातक हो सकती है। बीमारियां जैसे कि टाइफाइड बुखार, हैजा, निमोनिया, मेनिन्जाइटिस आदि ठीक होना मुश्किल होता जाएगा। सर्जरी विफल होने का बहुत खतरा होगा। जीवन बचाने के नवीन चिकित्सा ढंग निष्फल हो सकते हैं।

जीवन मंत्र

ओशो

जो उपयोगी है, वही सत्य है

कोई धन कमाने के खेल में लगा है, कोई राजनीति में, तो कोई किसी अन्य काम में। अपने-अपने खेल में लोग इतने उलझे हैं कि उसके खत्म हो जाने के बाद भी वे उनके सपनों के बादलों से घिरे रहते हैं, क्योंकि तुम सब मृत्यु में ही जी रहे हो,

एक बार बुद्ध से पूछा गया, क्या बुद्ध झूठ बोल सकते हैं? जो व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया हो, क्या वह झूठ बोल सकता है? बुद्ध ने उत्तर दिया, उसे बोलना होता है, क्योंकि उसे उपाय के रूप में नक्शे देने होंगे व सभी नक्शे झूठे हैं, वे सत्य की ओर किए गए संकेत हैं। एक बार तुम वहां पहुंच गए, तो नक्शे को फेंक दोगे। वह केवल उपयोगी था। इसलिए बुद्ध ने सत्य को नए ढंग से परिभाषित किया कि जो कुछ भी उपयोगी है, वही सत्य है। यही मुद्रा नक्शबंदियों की भी है।

एक बहुत ही प्राचीन सूफी कहानी

है, जिसमें एक पिता आग से घिरे घर से अपने बच्चों को बाहर निकालने के लिए उन्हें आवाज देता है। जब बच्चों ने पिता की पुकार की उपेक्षा की, तब पिता उन्हें यह कहकर बाहर आने को कहता है कि वह उनके लिए खिलौने लेकर आया है। खिलौने की बात सुनते ही बच्चे फौरन दौड़ते हुए बाहर आ जाते हैं। उस व्यक्ति के पास कोई खिलौना नहीं होता, पर इस उपयोगी तरकीब से वह अपने बच्चों की जान बचा ले जाता है।

अब पिता ने यहां सरासर झूठ बोला था। दरअसल, बच्चे छोटे थे, घर के अंदर थे, पर पिता घर के बाहर था। खतरे को भांपते हुए उसने व्याकुल पुकार लगाई थी, 'फौरन बाहर आ जाओ।' मगर बच्चे अपने खेल से इतने अधिक जुड़े व उलझे हुए थे कि उन्होंने पिता की बात सुनी ही नहीं। तब पिता ने यह झूठ गढ़ा कि 'देखो बच्चो! मैं तुम्हारे लिए वही खिलौने लेकर लाया हूं, जिसे तुम लोग हमेशा से चाहते थे। और भी बहुत सारे खिलौने हैं मेरे पास और सब के सब बहुत सुंदर हैं।' इतना सुनते ही बच्चे दौड़ते हुए बाहर आ गए।

अब यह एक विधि है, एक डिजाइन या नक्शा है। यह नक्शबंदी है। न यह सत्य है और न झूठ, पर यह उपयोगी है, अत्यधिक उपयोगी। क्या तुम यह कहोगे कि उस पिता ने झूठ बोलकर कोई पाप किया? क्योंकि दुनिया के सभी धर्म यही कहते हैं कि 'सदा सच बोलो। सत्यवादी बनो!'

ऐसा कई बार होता है, क्योंकि तुम सभी उन बच्चों के जैसे ही हो। तुम जिस घर में बैठे हो, वह वास्तव में आग से घिरा हुआ है, और तुम सब हो कि कुछ सुनते ही नहीं। तुम सभी लोग अपने-अपने खेलों में बुरी तरह से उलझे हुए हो। कोई धन कमाने के खेल में लगा है, कोई राजनीति में, तो कोई किसी अन्य काम में। अपने-अपने खेल में लोग इतने उलझे हैं कि उसके खत्म हो जाने के बाद भी वे उनके सपनों के बादलों से घिरे रहते हैं, क्योंकि तुम सब मृत्यु में ही जी रहे हो, इसीलिए तुम्हारा घर निरंतर आग से घिरा हुआ है। किसी भी क्षण तुम समाप्त हो जाओगे। सद्गुरु को तुम्हें बाहर निकालने के उपाय खोजना पड़ता है। जतन करना पड़ता है।

शख्सियत

वीरभद्रन रामनाथन

जलवायु परिवर्तन के योद्धा

वीरभद्रन रामनाथन एक प्रसिद्ध भारतीय-अमेरिकी वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने जलवायु परिवर्तन और वैश्विक पर्यावरणीय संकटों पर गहन शोध किया है। उनका जन्म 24 नवंबर 1944 को चेन्नई, भारत में हुआ। वे अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में आगे बढ़े और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी महत्वपूर्ण खोजों में योगदान दिया।

रामनाथन ने अपने करियर की शुरुआत वायुमंडलीय विज्ञान के अध्ययन से की। 1975 में उन्होंने एक ऐतिहासिक खोज की कि क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs) जैसे प्रदूषक, जो रेफ्रिजरेशन और एरोसोल में उपयोग होते हैं, ग्लोबल वॉर्मिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह पहली बार था जब कार्बन डाइऑक्साइड के अलावा अन्य गैसों को जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार माना गया। उनकी सबसे प्रमुख परियोजनाओं में से एक है ₹अंतरराष्ट्रीय ब्राउन क्लाउड परियोजना₹, जिसमें उन्होंने यह दिखाया कि एशिया में वायुमंडल में प्रदूषणकारी कण, जैसे काला कार्बन (ब्लैक कार्बन), न केवल स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं बल्कि जलवायु परिवर्तन को भी तेज करते हैं। वीरभद्रन रामनाथन का अनुसंधान वैश्विक नीतियों को प्रभावित करने वाला साबित हुआ है। उनके कार्यों के कारण विश्व ने ब्लैक कार्बन और अन्य प्रदूषकों पर नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठाए हैं। वे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विज्ञान, नीति और सामाजिक जागरूकता के संगम की आवश्यकता पर जोर देते हैं। रामनाथन ने यह भी दिखाया कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव गरीब और विकासशील देशों पर अधिक होता है। उन्होंने पर्यावरणीय न्याय और समाज के कमजोर वर्गों की रक्षा के लिए काम किया। उनके प्रयासों को संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने मान्यता दी है। रामनाथन को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं, जिनमें टायलर एनवायरनमेंटल प्राइज और गोल्डमैन एनवायरनमेंटल प्राइज शामिल हैं। उनका जीवन और कार्य यह सिखाता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समर्पण के साथ हम पृथ्वी और मानवता के भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

जीवन ऊर्जा

लॉरेंस स्टर्नः जन्म 24 नवंबर 1713

जन्म

दुनिया में मुस्कान से बेहतर दृश्य कुछ नहीं

लॉरेंस स्टर्न, जन्म 24 नवंबर 1713 को आयरलैंड में हुआ, 18वीं सदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार और पादरी थे। वे अपने प्रसिद्ध उपन्यास द लाइफ एंड ओपिनियन्स ऑफ ट्रिस्ट्रम शैंडी और अ सेंटिमेंटल जर्नी के लिए जाने जाते हैं। उनका निधन 18 मार्च 1768 को हुआ, लेकिन उनकी कृतियां आज भी प्रेरणादायक हैं।

स्वयं के प्रति सम्मान हमारे नैतिक मूल्यों को मार्गदर्शित करता है; दूसरों के प्रति सम्मान हमारे व्यवहार को।दुख और सुख, प्रकाश और अंधकार की तरह, एक-दूसरे के बाद आते हैं।

एकांत में मन मजबूत होता है और आत्मनिर्भर बनना सीखता है। ज्ञान की चाहत, धन की प्यास की तरह, हमेशा बढ़ती जाती है। हर बार जब कोई व्यक्ति मुस्कुराता है, लेकिन खासकर जब वह हंसता है, तो यह उसके जीवन में कुछ जोड़ता है। जब कोई व्यक्ति अपने आप से असंतुष्ट होता है, तो इसमें एक लाभ होता है: वह सौदेबाजी के लिए उत्तम मनःस्थिति में होता है। लेखन, यदि सही ढंग से किया जाए, तो बातचीत का दूसरा रूप है। विचारों का पूर्ण परिवर्तन जितना आनंददायक कुछ भी नहीं। समय बहुत तेज़ी से बीतता है; मेरे द्वारा लिखा गया हर अक्षर यह बताता है कि

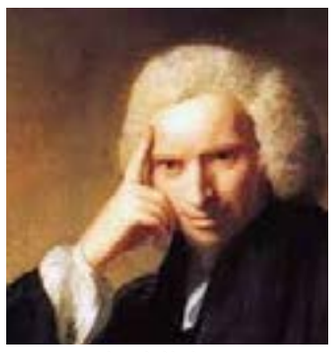

जीवन कितनी तेज़ी से मेरे लेखनी का अनुसरण कर रहा है। उस व्यक्ति पर कभी भरोसा न करें जिसके पास हर चीज़ में अंतरात्मा नहीं है। भटकाव निस्संदेह पढ़ने का प्रकाश है; यह जीवन और आत्मा है। अपनी संपत्ति बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप अपनी कमाई का आधा हिस्सा बचाएं। हमारे जुनून वे हवाएं हैं जो हमारी नाव को आगे बढ़ाती हैं। एक अच्छा उपमा हजार रूपकों के बराबर होती है। जीत का एक घंटा नौ वर्षों की औसत स्थिति से बेहतर है। सच्ची महानता छोटी चीजों में महान होने में निहित है। जो लोग अपने स्वास्थ्य का अत्यधिक ख्याल रखते हैं, वे अक्सर सबसे कमजोर जीवन जीते हैं। किसी व्यक्ति का धर्म उसके बारे में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है। किसी व्यक्ति के दिल का इतिहास उसके कर्मों में प्रकट होता है। प्यार बिना सम्मान के कुछ नहीं, और सम्मान बिना प्यार के कुछ नहीं। जो व्यक्ति के मुंह से निकलता है, वह उसके दिल में प्रवेश करता है। दुनिया में मुस्कान से बेहतर दृश्य कुछ नहीं। थोड़ा अविश्वास समझदारी है; अधिक अविश्वास पागलपन है। संगीत, आत्मा की भाषा, कभी अनुपस्थित नहीं होनी चाहिए। दुनिया को भली-भांति जानना यह है कि उसके बीच अपने दिल को पवित्र रखना।

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ बिजाना शाजापुर मध्य प्रदेश

श्री हनुमानजी की महिमा

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम हाथ जोड़कर अगस्त्यमुनि से बोले -ऋषिवर! निःसन्देह बालि और रावण दोनों ही भारी बलवान थे, परंतु हनुमान उन दोनों से अधिक बलवान हैं। इनमें शूरवीरता, बल, धैर्य, नीति, सद्गुण सभी उनसे अधिक हैं। यदि मुझे ये न मिलते तो भला क्या जानकी का पता लग सकता था! मेरे समझ में यह नहीं आया कि जब बालि और सुग्रीव में झगड़ा हुआ तो इन्होंने अपने मित्र सुग्रीव की सहायता करके बालि को क्यों नहीं मारा। आप कृपा करके हनुमानजी के बारे में मुझे सब कुछ बताईये।

रघुनाथजी के वचन सुनकर अगस्त्य मुनि बोले -हे रघुनन्दन! आप ठीक कहते हैं। हनुमानजी अद्भुत बलवान, पराक्रमी और सद्गुण सम्पन्न हैं, परंतु ऋषियों के श्राप के कारण इन्हें अपने बल का पता नहीं था। आपको इनके विषय में सब कुछ बताता हूं।

हनुमानजी के पिता केसरी सुमेरुपर्वत पर राज्य करते थे, उनकी पत्नी का नाम अंजना था। इनके जन्म के पश्चात एकदिन इनकी माता फल लाने के लिये इन्हें आश्रम में छोड़कर चली गई, जब शिशु हनुमान को भूख लगी तो वे उगते हुये सूर्य को फल समझकर उसे पकड़ने के

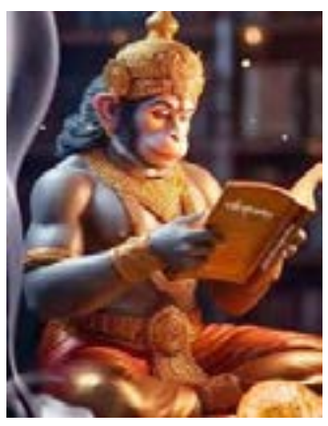

लिये आकाश में उड़ने लगे, उनकी सहायता के लिये पवन भी बहुत तेजी से चला। उधर भगवान सूर्य ने उन्हें अबोध शिशु समझकर अपने तेज से नहीं जलने दिया, जिस समय हनुमानजी सूर्य को पकड़ने के लिये लपके, उसी समय राहु सूर्य पर ग्रहण लगाना चाहता था। हनुमानजी ने सूर्य के ऊपरी भाग में जब राहु का स्पर्श किया तो वह भयभीत होकर वहां से भाग गया। उसने इंद्र के पास जाकर शिकायत की कि -देवराज! आपने मुझे अपनी क्षुधा शांत करने के साधन रुप में सूर्य और चंद्र दिये थे। आज जब अमावस्या के दिन सूर्य को ग्रस्त करने के लिये गया, तो मैंने देखा कि एक दूसरा राहु सूर्य को पकड़ने जा रहा है। राहु की बात सुनकर इंद्र घबरा गये और राहु को साथ लेकर सूर्य की ओर चल पड़े। राहु को देखकर हनुमानजी सूर्य को छोड़कर राहु पर झपटे। राहु ने इंद्र को रक्षा के लिये पुकारा तो उन्होंने हनुमानजी के ऊपर वज्र का प्रहार किया, जिससे वे एक पर्वत पर जा गिरे और उनकी बायीं ठुड्डी टूट गई। हनुमानजी की यह दशा देखकर वायुदेव को क्रोध आया, उन्होंने उसीक्षण अपनी गति रोक ली। इससे कोई भी प्राणी सांस नहीं ले सका और सब पीड़ा से तड़पने पर सारे सुर, असुर, यक्ष, किन्नर आदि ब्रह्माजी की शरण में गये। ब्रह्माजी उन सबको लेकर वायुदेव के पास गये। वह मृत हनुमानजी को गोद में लिये उदास बैठे थे, जब ब्रह्माजी ने उन्हें जीवित कर दिया तो वायुदेव ने अपनी गति का संचार करके सब प्राणियों की पीड़ा दूर की, चूंकि इंद्र के वज्र से हनुमानजी की हनु (ठुड्डी) टूट गई थी, लेकिन कुछ लोग कहते हैं की हनुमान जी की ठुड्डी में कुछ भी नहीं हुआ बल्कि इंद्र के वज्र को ही हानि हुई इसलिये तब से उनका नाम हनुमान हो गया, फिर प्रसन्न होकर सूर्य ने हनुमानजी को अपने तेज का 100वां भाग दिया। वरुण, यम, कुबेर, विश्वकर्मा आदि ने उन्हें अजेय पराक्रमी, अवध्य होने, नाना प्रकार के रुपधारण करने की क्षमता आदि का वर दिया। इस प्रकार नाना शक्तियों से संपन्न हो जाने पर निर्भय होकर वह ऋषि मुनियों के साथ शरारत करने लगे और वह किसी के वल्कल फाड़ देते, किसी की कोई वस्तु नष्ट कर देते, इससे क्रुद्ध होकर ऋषियों ने इन्हें श्राप दिया कि तुम अपने बल और शक्ति को भूल जाओगे। किसी के याद दिलाने पर ही तुम्हें उनका ज्ञान होगा, तब से उन्हें अपने बल और शक्ति का स्मरण नहीं रहा।

पंडित कैलाशचंद्र शर्मा
वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व सर्व सिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ के संस्थापक।
मो. नं. 9425980556

सक्सेस मंत्र

खुद पर भरोसा

एक युवक ने नामी यूनीवर्सिटी से ग्रैजुएशन की पढ़ाई पूरी की। उसमें स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा था। उसने विश्वविद्यालय की शिक्षा भी अपने प्रयत्नों से, अपने श्रम से धन जुटाकर पूरी की और अब उसके पास कुछ भी पूंजी शेष न थी। पढ़ाई पूरी करने के बाद वह नौकरी खोजने लगा। कई महीने तक उसे नौकरी नहीं मिली। वह निराश हो गया। पैसे खत्म हो जाने के कारण उसे दो दिन से खाना भी नहीं मिल पाया था और किराया न दे पाने की वजह से उसे अपना कमरा भी छोड़ना पड़ा। अब वह रात में पार्क की बेंच पर सोने लग गया था। उसे निराशा ने घेर लिया और अपना जीवन बेकार लगने लगा। वह नौकरी के लिए जहाँ भी जाता, नौकरी न मिलती। अंत में निराश होकर उसने नौकरी ढूंढना ही छोड़ दिया। उसे लगा कि उसके भविष्य में प्रकाश की एक किरण भी बाकी नहीं बची। उसके कपड़े भी फटने लग गए थे। पैसों की कमी और भूख के कारण उसकी दशा बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। इस वजह से नौकरी के लिए इंटरव्यू में जाने का आत्मविश्वास भी उसमें नहीं बचा था। काफी कोशिशों के बाद उसे एक रद्दी से होटल में बर्तन मांजने की नौकरी मिली। इससे उसे खाना तो जैसे-तैसे मिलने लगा, लेकिन सोने के लिए अब भी उसे बाग में पड़ी बेंच का सहारा लेना पड़ता था। एक रात वह अपने भविष्य की चिंता में लेटा हुआ था कि अचानक उसे आसमान में मोटे-मोटे लाल अक्षरों में लिखा दिखाई दिया– 'अपने पर विश्वास रखो।'

सारी रात वह सो नहीं सका। व्याकुलता से वह सुबह होने की प्रतिक्षा करने लगा। सुबह होते ही उसने अपने मन में वह बात पुनः दोहराई – 'अपने पर विश्वास रखो।' वह उठा और नदी किनारे गया। वहां जाकर उसने हाथ-मुंह धोकर अच्छी तरह दाढ़ी बनाई। उसके बाद वह एक मोची के पास गया और उससे बूट पॉलिश मांगकर अपने जूतों को चमकाया। तब मन में दृढ़-संकल्प के साथ नौकरी खोजने लगा। अब वह किसी कार्यालय में जाता तो उसका स्वागत होता था। अब वह चोर नहीं लग रहा था। उसके वस्त्र विशेष अच्छे नहीं थे, पर उसके मुख पर आत्मविश्वास की झलक थी। वह जो कहता था, उससे भी आत्मविश्वास झलकता था। सौभाग्य से उसे नौकरी मिल गई। नौकरी उतनी अच्छी न थी, जितनी वह चाहता था या इच्छा करता था, लेकिन फिर भी काफी अच्छी थी। सबसे बड़ी बात यह थी की वह अपनी समस्या को सुलझाने में सफल हो गया था।

यह अखबार "माध्यम कार्पोरेट सर्विसेज लि. " के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अरुणलाल द्वारा ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के. के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001 से प्रकाशित एवं सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. 4, एन.के.इंडस्ट्रियल इस्टेट, इनसाइड प्रवासी इंडिस्ट्रयल इस्टेट गेट नं. 2, गोरेगांव पू., मुंबई-63 से मुद्रित। फोन नं. 022-66555719 ईमेल : indiagroundreport@gmail.com कार्यकारी संपादक : राजा आदाटे (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)।

- 81 सीटों के चुनाव परिणाम घोषित
- 56 सीटों पर जीत दर्ज की झामुमो गठबंधन ने
- 21 सीटों पर जीत हासिल की बीजेपी ने

झारखंड को हेमंत पसंद है

रांची। निर्वाचन आयोग ने झारखंड विधानसभा की सभी 81 सीटों के चुनाव परिणाम घोषित कर दिए हैं। हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाले चार पार्टियों के गठबंधन ने कुल 56 सीटों पर जीत दर्ज की है। राज्य के 24 वर्षों के इतिहास में पहली बार कोई गठबंधन दो तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रहा है। हेमंत सोरेन का फिर से गठबंधन का नेता चुना जाना तय है और वह राज्य में चौथी बार सीएम पद की शपथ लेने वाले पहले नेता होंगे।

झारखंड मुक्ति मोर्चा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

सत्तारूढ़ गठबंधन की अगुवाई करने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 34 सीटों पर जीत दर्ज की है। वर्ष 2019 के चुनाव में उसने 30 सीटें हासिल की थीं। कांग्रेस ने भी वर्ष 2019 का प्रदर्शन बरकरार रखते हुए 16 सीटों पर जीत दर्ज की है। राष्ट्रीय जनता दल को 4 और सीपीआई एमएल को 2 सीटों पर जीत मिली है।

भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका

दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका लगा है। उसके उम्मीदवारों ने 21 सीटों पर जीत हासिल की है। पिछले चुनाव में उसे 25 सीटें मिली थीं। एनडीए के अन्य साझेदारों में आजसू पार्टी, जदयू और एलजीपी (आर) को एक-एक सीटों पर जीत मिली है। अकेले चुनाव लड़ने वाली झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा नामक नई पार्टी ने एक सीट हासिल की है। इस पार्टी के अध्यक्ष जयराम कुमार महतो गिरिडीह जिले की डुमरी सीट पर हेमंत सोरेन सरकार की मंत्री बेबी देवी को पराजित किया है। भारतीय जनता पार्टी को इस बार भी अनुसूचित जनजाति यानी आदिवासी के लिए सुरक्षित सीटों पर जबरदस्त शिकस्त मिली है। ऐसी कुल 28 सीटों में से मात्र एक सरायकेला की सीट भाजपा के हिस्से आई है, जहां पूर्व सीएम चंपई सोरेन ने जीत हासिल की है।

सीएम हेमंत सोरेन बरहेट से जीते, लेकिन उनके इन चार मंत्रियों को मिली शिकस्त

झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन बरहेट से विधानसभा चुनाव जीत गए हैं, लेकिन उनके चार मंत्रियों को पराजय का सामना करना पड़ा है। गढ़वा से मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर, डुमरी से मंत्री बेबी देवी, जमशेदपुर पश्चिमी से मंत्री बन्ना गुप्ता और लातेहार से मंत्री बैद्यनाथ राम चुनाव हार गए हैं।

ये मंत्री हार गए चुनाव

झारखंड के पेयजल मंत्री और झामुमो प्रत्याशी मिथिलेश कुमार ठाकुर चुनाव हार गए हैं। उन्हें बीजेपी प्रत्याशी सत्येंद्र नाथ तिवारी ने शिकस्त दी है। जमशेदपुर पश्चिमी विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी सह स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता को हार का सामना करना पड़ा है। इन्हें जदयू प्रत्याशी सरयू राय ने पराजित किया है। डुमरी विधानसभा सीट से झामुमो प्रत्याशी और मंत्री बेबी देवी भी चुनाव हार गयी हैं। जेएलकेएम प्रमुख जयराम महतो ने उन्हें हराया है। लातेहार विधानसभा क्षेत्र से झामुमो प्रत्याशी और शिक्षा मंत्री बैद्यनाथ राम भी चुनाव हार गए हैं। बीजेपी के प्रकाश राम से उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

इन मंत्रियों ने लहराया जीत का परचम

झारखंड की 81 विधानसभा सीटों पर मतगणना पूरी हो गयी। बरहेट विधानसभा सीट से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जीत दर्ज की है। उन्हें 95612 वोट मिले हैं। इनके मंत्री घाटशिला विधानसभा सीट से रामदास सोरेन, चाईबासा से दीपक बिरुवा, महगामा से दीपिका पांडेय सिंह, जामताड़ा से इरफान अंसारी, लोहरदगा से रामेश्वर उरांव और मधुपुर से हफीजुल हसन ने जीत का परचम लहराया है। इंडिया गठबंधन में झामुमो 43, कांग्रेस 30, राजद सात और भाकपा माले ने चार सीटों पर चुनाव लड़ा था। कुछ सीटों पर फ्रेंडली फाइट था।

27 दलबदलू उम्मीदवारों में 8 को मिली जीत

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 में झारखंड मुक्ति मोर्चा, भारतीय जनता पार्टी, ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने मिलकर 27 दलबदलू उम्मीदवारों को टिकट दिया। इनमें से 19 को हार का सामना करना पड़ा। सिर्फ 8 लोग जीत पाए। अपनी पार्टी छोड़कर झामुमो में शामिल होने वाले 7 उम्मीदवारों में 3 को हार का मुंह देखना पड़ा।

भाजपा छोड़कर झामुमो में आए गणेश महली समेत ये लोग हारे

झामुमो ने भाजपा छोड़कर पार्टी में शामिल हुए गणेश महली को सरायकेला विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया था। वह भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ने वाले चंपाई सोरेन से हार गए हैं। राजमहल विधानसभा सीट पर झामुमो ने आजसू के एमटी राजा को टिकट दिया था, वह चुनाव हार गए हैं। भाजपा छोड़कर झामुमो में शामिल होने वाले केदार हाजरा भी जमुआ विधानसभा सीट पर चुनाव हार गए हैं।

चुनाव से पहले भाजपा में शामिल होने 8 प्रत्याशियों में 5 को मिली हार

भाजपा में शामिल होने वाले 8 दलबदलुओं को टिकट दिया था। इनमें से 5 हार गए। आजसू से भाजपा में आए रोशनलाल चौधरी ने बड़कागांव की कांग्रेस विधायक अंबा प्रसाद को पराजित कर दिया। कांग्रेस छोड़कर आने वाली जमुआ की उम्मीदवार डॉ मंजु देवी ने इस विधानसभा सीट पर जीत दर्ज कर ली है। झामुमो से भाजपा में आने वाले चंपाई सोरेन ने सरायकेला विधानसभा सीट पर जीत दर्ज करके अपनी बादशाहत बरकरार रखी है।

इन दलों में शामिल होने वाले दलदबदलू भी हारे

अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर आजसू, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी में शामिल होने वाले सभी उम्मीदवारों को हार का मुंह देखना पड़ा। झारखंड विधानसभा चुनाव के परिणाम अब करीब-करीब स्पष्ट हो गए हैं। झारखंड में एक बार फिर झारखंड मुक्ति मोर्चा-कांग्रेस-राष्ट्रीय जनता दल और भाकपा माले (लिबरेशन) की गठबंधन सरकार बनने जा रही है।

भाजपा के हार की 5 बड़ी वजहें

☐ बिना सीएम उम्मीदवार के लड़ाई

एनडीए ने कोई सीएम उम्मीदवार पेश नहीं किया। राज्य भाजपा के एक सूत्र ने दावा किया कि चुनाव में आदिवासी मुख्यमंत्री का चेहरा पेश नहीं कर पाने से भाजपा को भारी कीमत चुकानी पड़ी। वहीं जेएमएम की अगुवाई वाले गठबंधन की ओर से खुद हेमंत सोरेन सीएम चेहरा थे।

☐ दूसरे दलों से आए नेताओं को टिकट

एक अन्य नेता ने दावा किया कि अभियान बाहर से आए दो नेताओं की ओर से चलाया जा रहा था। राज्य भाजपा ने अपने नेताओं की अनदेखी की और दूसरे दलों से आए नेताओं को टिकट दिए।

☐ जमीनी मुद्दों को उठाने में विफल रही भाजपा

राजनीतिक विश्लेषक डॉ. बागीश चंद्र वर्मा का कहना है कि भाजपा अपने पूरे चुनावी अभियान के दौरान जनता से जुड़े जमीनी मुद्दों को उठाने में विफल रही। इससे ग्रामीण जनता भाजपा से जुड़ने में विफल रही। भाजपा का चुनावी कैंपेन केवल राष्ट्रीय मुद्दों और घुसपैठ पर फोकस था।

☐ महिलाओं वोटरों पर जेएमएम का फोकस

रांची विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. बागीश चंद्र वर्मा ने कहा कि मुस्लिम, ईसाई और आदिवासी झामुमो के पारंपरिक वोट बैंक थे। इसके अलावा 18-50 साल की उम्र वर्ग की महिलाओं को जेएमएम ने अपने पाले में किया। इसमें मैया सम्मान योजना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झारखंड की 81 विधानसभा सीटों में से 68 पर महिला मतदाताओं की संख्या पुरुषों से अधिक है।

☐ जेएलकेएम ने पहुंचाया नुकसान

झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) ने भी चंदनकियारी सीट की तरह भाजपा और आजसू पार्टी को नुकसान पहुंचाते हुए मतों का एक बड़ा हिस्सा हासिल किया। आलम यह कि चंदनकियारी विधानसभा सीट पर नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी न केवल झामुमो के उमाकांत रजक से हार गए। भाजपा के सहयोगी आजसू ने 10 और जदयू ने दो और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने एक सीट पर चुनाव लड़ा।

'मंईयां को सम्मान' से मिला हेमंत को जीत का वरदान

झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 में महिलाओं की भागीदारी काफी महत्वपूर्ण रही है। सरकार ने महिलाओं को लुभाने के लिए मंईयां सम्मान निधि योजना की घोषणा की। इस योजना के तहत 18 से 50 वर्ष तक की आयु की महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपए दिए जाने की शुरुआत हुई है। सरकार को यह उम्मीद थी कि योजना के प्रभाव में उन्हें महिलाओं का साथ मिलेगा। चुनाव परिणाम के रुझान इस बात की ओर इशारा भी कर रहे हैं कि सरकार को महिलाओं का साथ मिला है।।

यूपी उपचुनाव परिणाम

सात सीटों पर खिला 'कमल' दो पर दौड़ी 'साइकिल'

सीएम योगी ने पीएम मोदी को दिया जीत का श्रेय

लखनऊ। यूपी की 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी का जादू चला है। सीएम योगी का बुलडोजर इस उपचुनाव में काम आया, लेकिन सपा की साइकिल नहीं चली। 9 सीटों में से सात सीटों पर भाजपा ही जीती है। वहीं, सपा का जादू सिर्फ दो सीटों पर ही चल सका। उपचुनाव के नतीजों को देखकर लग रहा है कि अखिलेश का गठबंधन को तरजीह ना देना भारी पड़ गया। अखिलेश ने लोकसभा चुनाव की तरह उपचुनाव में भी कांग्रेस के साथ को सही तरीके (गंभीरता) से नहीं लिया। राजनीतिकार बताते हैं कि कांग्रेस जितनी भी सीट मांग रही थी, सपा ने उसे नहीं दिया। सपा ने सात सीटों पर एकतरफा तौर पर प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया। बताया जा रहा है कि अगर कांग्रेस को सीट मिलती और वो भी सपा के साथ पूरी ताकत से चुनावी मैदान में रहती तो कुछ सीटों का परिणाम अलग हो सकता था। फिर शायद दो सीटें नहीं, सपा के खाते में कुछ और सीटें आ सकती थीं। इसके अलावा समाजवादी पार्टी ने फूलपुर, सीसामऊ, कुंदरकी और मीरापुर में चार मुस्लिम उम्मीदवारों को उतारा, जिसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ा। सीसामऊ को छोड़कर अन्य सीटों पर हिंदू मतदाता ज्यादा हैं, इसलिए ये सीटें भाजपा की ओर चली गईं। यहां पर सीएम योगी का 'बंटेंगे तो कटेंगे' का नारा चल गया। फूलपुर सीट पर भी मुस्लिम प्रत्याशी उतारने का निर्णय किसी को भी हजम नहीं हुआ। कांग्रेस ये सीट सपा से मांग रही थी। अखिलेश यादव ने तीन सीटों पर परिवार के लोगों को टिकट दिया था, जिसमें करहल विधानसभा सीट से तेज प्रताप यादव, सीसामऊ से नसीम सोलंकी और अंबेडकरनगर की कटेहरी सीट से सांसद लालजी वर्मा की पत्नी शोभवती वर्मा को टिकट दिया था। राजनीतिकारों का मानना है कि कार्यकर्ताओं के बीच परिवारवाद हावी रहा और ये मैसेज जनता के बीच सही तरीके से नहीं गया।

मीरापुर विधानसभा

रालोद की मिथलेश पाल जीतीं

मीरापुर उपचुनाव में रालोद की मिथलेश पाल ने जीत दर्ज की है। मिथिलेश पाल को कुल 84304 वोट मिले हैं। उन्होंने 30796 वोटों के अंतर से सपा की सुंबुल राणा को मात दी है। सुंबुल को कुल 53508 वोट मिले हैं।

सपा मीरापुर में क्यों हारी?

यहां पर सपा की हार के कारण कई प्रमुख कारण माने जा रहे हैं, जिनमें से सबसे पहला तो यह है कि मुस्लिम बहुल सीट पर वोट प्रतिशत में काफी कमी रही। मतदान के दिन मुस्लिम बहुल इलाकों में 40 प्रतिशत ही वोटिंग हो पाई। इसके अलावा, सपा ने नए चेहरे के साथ प्रयोग किया था, जबकि रालोद ने पुराना और टिकाऊ पत्ता फेंका। गौरतलब है कि समाजवादी पार्टी ने पूर्व सांसद कादिर राणा की बहू सुंबुल राणा का प्रत्याशी बनाया था, जिनका अपना कोई राजनीतिक करियर नहीं रहा। हालांकि, उनकी गिनती करोड़पतियों में जरूर होती है।

मिथलेश पाल की जीत का सबसे बड़ा कारण

उपचुनाव की घोषणा के बाद एनडीए गठबंधन में शामिल रालोद के लिए भाजपा ने यह सीट छोड़ दी थी। रालोद ने अपना प्रत्याशी मिथलेश पाल को बनाया, जिसके बाद यह कयास लगाए जाने लगे कि कि रालोद के लिए यह सीट चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन मतगणना के बाद जीत मिथलेश के पाले में आ गई। मतदान प्रतिशत का जो आंकड़ा सामने आया, उससे काफी हद तक मिथलेश की जीत मानी जा रही थी। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस बार रालोद को भाजपा का सपोर्ट मिल गया।

कुंदरकी विधानसभा

65 फीसदी मुस्लिमों के बीच खिला 'कमल'

1.43 लाख वोटों से रिजवान को हराया, सपा की जमानत जब्त

कुंदरकी विधानसभा उपचुनाव में भाजपा के प्रत्याशी रामवीर सिंह ने 32वें राउंड की गिनती के बाद ऐतिहासिक जीत हासिल की। रामवीर सिंह ने सपा के उम्मीदवार मोहम्मद रिजवान को हराकर कुंदरकी सीट पर विजय प्राप्त की। रामवीर सिंह ने 168526 वोट हासिल किए जबकि रिजवान को केवल 25334 वोट मिले। रामवीर ने सपा के उम्मीदवार को 163192 वोटों से हराया। कुल 219783 वोटों की गिनती के बाद भाजपा के रामवीर सिंह कुंदरकी में भाजपा की ऐतिहासिक जीत के प्रतीक बन गए। 65 फीसदी मुस्लिम आबादी वाली कुंदरकी विधानसभा सीट पर बीजेपी के प्रत्याशी ठाकुर रामवीर सिंह का 'भाईजान' मॉडल में उतरकर प्रचार करने का दांव हिट रहा है और सपा पस्त नजर आई. कुंदरकी में 65 फीसदी के करीब मुस्लिम मतदाता होने के चलते सपा यहां अपनी जीत तय मानकर चल रही थी. मुस्लिम वोटों के सियासी समीकरण के चलते सपा चार बार कुंदरकी सीट पर अपना विधायक बनाने में कामयाब रही है. बीजेपी अपने सियासी इतिहास में सिर्फ 1993 के उपचुनाव में कुंदरकी सीट जीतने में कामयाब रही थी. मुस्लिम समीकरण के चलते बीजेपी के लिए सबसे मुश्किल भरी सीट नजर आ रही थी, लेकिन ठाकुर रामवीर सिंह का 'भाईजान मॉडल' में प्रचार करने की स्टाइल मुस्लिमों को खूब पंसद आई और सपा की सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया.

अजान के दौरान बंद कर देते थे भाषण

बीजेपी प्रत्याशी रामवीर सिंह सिर ने जालीदार गोल नमाजी टोपी और गले में सऊदी स्टाइल की चादर ओढ़े 'भाईजान' लुक में प्रचार करने का दांव चला. रामवीर मुस्लिम इलाके में बीजेपी सिर्फ प्रचार तक सीमित नहीं है बल्कि कुरान की आयत पढ़कर अपने भाषण का आगाज करते थे. इस्लामिक अंदाज में रचे बसे रामवीर सिंह को जैसे ही अजान आवाज आती है तो अपना भाषण देना बंद कर देते हैं और चुपचाप खड़े रहते हैं. अजान खत्म होने के बाद फिर दोबारा से अपना भाषण वो शुरू करते.

बीजेपी की जीत के पीछे कुंवर बासित अली

कुंदरकी में भले ही रामवीर सिंह विधायक बनने में कामयाब हुए हों, लेकिन बीजेपी की जीत की असल इबारत लिखने का काम अल्पसंख्यक मोर्चे के प्रदेश अध्यक्ष कुंवर बासित अली ने किया. उन्होंने शुरू से ही मुस्लिम इलाकों पर खास फोकस कर रखा था. बासित अली कुंदरकी सीट पर मुस्लिमों को अल्लाह की कसम खिलवा कर बीजेपी को वोट देने का वादा ले रहे थे. मुस्लिम गांव में बासित ने नारा दिया था 'दूरी है, न खाई है, ठाकुर रामवीर हमारा भाई है.' इतना ही नहीं बीजेपी ने तुर्क मुस्लिम बनाम राजपूत मुस्लिम वोटों को साधने का दांव चला.

मुस्लिमों ने रामवीर का जमकर दिया साथ

सपा से चुनाव लड़ रहे हाजी रिजवान तुर्क थे, जिनके खिलाफ राजपूत मुस्लिमों को साधने का दांव चला, जिसमें भूमिका बासित अली ने बनाई थी. बासित अली मुस्लिम राजपूत हैं और ठाकुर रामवीर सिंह को उन्होंने अपना भाई बताकर मुस्लिम वोटों के बीच पैठ बनाई. कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र में मूंढापांडे गांव मुस्लिम बहुल है. रामवीर सिंह यहां एक नुक्कड़ सभा को संबोधित करने पहुंचे थे. मुस्लिम समुदाय के लोगों ने रामवीर सिंह को पैसे से तौला था.पैसों को रामवीर ठाकुर ने अपने माथे से लगाकर लोगों के प्रति अपना आभार जताया. गांव के मुस्लिमों ने रामवीर सिंह से कहा था कि हम इस मिथक को तोड़ देंगे कि मुसलमान बीजेपी को वोट नहीं देता है. हम रामवीर को वोट भी देंगे और चुनाव लड़ाने के लिए नोट भी देंगे. मुस्लिमों ने बीजेपी को कुंदरकी में जमकर वोटिंग किया है, जो नतीजे से भी साफ है.

कटेहरी विधानसभा

33 साल बाद कटेहरी में खिला कमल

धर्मराज निषाद ने 34 हजार वोटों से शोभावती को हराया

अम्बेडकरनगर के कटेहरी विधानसभा के उपचुनाव में 33 साल बाद बीजेपी ने इस सीट पर कमल खिलाने में सफल रही है. कटेहरी विधानसभा उपचुनाव में बीजेपी प्रत्याशी धर्मराज निषाद ने 33 हजार 828 वोटो से जीत दर्ज कर विजयी घोषित हुए हैं. धर्मराज निषाद ने समाजवादी पार्टी प्रत्याशी शोभावती वर्मा को हरा कर जीत का परचम लहराया है. बीजेपी प्रत्याशी धर्मराज निषाद को 1,03,137 वोट मिले और सपा प्रत्याशी शोभावती वर्मा को 69,309 वोट मिले हैं. वहीं सुबह 8 बजे से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतगणना शुरू हुई और पहले राउंड की मतगणना में धर्मराज निषाद को बढ़त मिल गयी. इसके बाद में कुछ राउंड में सपा को बढ़त मिली लेकिन इसके बाद फिर से धर्मराज निषाद को बढ़त मिली. दोबारा मिली बढ़त के बाद बीजेपी प्रत्याशी की बढ़त लगातार अंतिम राउंड तक बढ़ती चली गयी और बड़े अंतर चुनाव जीतने में बीजेपी सफल रही. बीजेपी को जीत मिलते ही कार्यकर्ता और पदाधिकारी जश्न में डूब गए. उन्होंने अबीर गुलाल के साथ ढोल नगाड़े बजाए. धर्मराज निषाद कटेहरी से चौथी बार विधायक चुने गए हैं.

शीर्ष नेतृत्व का जताया आभार

इसके पहले धर्मराज निषाद तीन बार वह बसपा से कटेहरी से विधायक चुने गए थे. धर्मराज निषाद ने जीत दर्ज करने के बाद बताया कि यह जीत जनता और कार्यकर्ताओं की जीत है. उन्होंने इस जीत के लिए शीर्ष नेतृत्व का आभार भी जताया है. गौरतलब है कि यह सीट बीजेपी ने 1991 के बाद से कभी नहीं जीती थी. इस सीट पर बीएसपी और समाजवादी पार्टी का हमेशा दबदबा रहा है. लेकिन अब 33 सालों के बाद बीजेपी ने जीत दर्ज की है. बता दें कि राज्य में 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए थे. इन 9 सीटों में से 7 सीटों पर बीजेपी गठबंधन ने जीत दर्ज की है. जबकि करहल और सीसामऊ सीट पर सपा ने जीत दर्ज की है.

खैर विधानसभा

चारू केन चारों खाने चित्त, खैर उपचुनाव के 'खिलाड़ी'

बने सुरेंद्र सिंह दिलेर, भाजपा ने लगाई जीत की हैट्रिक

खैर विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में भाजपा ने जीत की हैट्रिक लगाई है। पूर्व सांसद किशनलाल दिलेर के नाती व राजवीर दिलेर के पुत्र सुरेंद्र दिलेर ने अपने परिवार की बादशाहत कायम रखते हुए सपा की चारूकैन को 38393 वोटों के बड़े अंतर से हराया है। 2017 के बाद से भाजपा की यह लगातार तीसरी जीत है। इस बार के चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को कुल 100181 लाख मत प्राप्त हुए है तो सपा प्रत्याशी 61788 वोट ही ले सकीं। बसपा प्रत्याशी डा. पहल सिंह को इस बार 13365 वोटों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है और उनकी जमानत जब्त हो गई। अन्य प्रत्याशी चार अंकों का आंकड़ा भी नहीं छू सके।

पहले राउंड से ही बढ़त पर रहे सुरेंद्र

शनिवार को कड़ी सुरक्षा में धनीपुर मंडी परिसर में मतगणना शुरू हुई। सुबह आठ बजे सबसे पहले मतपत्रों की गिनती हुई। इसके बाद ईवीएम के वोटों की गिनती शुरू हुई। इसमें पहले राउंड की शुरुआत के साथ ही भाजपा प्रत्याशी सुरेंद्र दिलेर ने बढ़त बनानी शुरू कर दी। हर राउंड में सपा प्रत्याशी के सामने लीड बढ़ती चली गई। पांच राउंड तक वोटों को अंतर 10 हजार के करीब पहुंच गया। आखिरी राउंड तक भाजपा की जबदरस्त लीड कायम रही। कुल 31 राउंड में 1.84 लाख मतों की गिनती की गई। इसमें भाजपा ने सबसे अधिक 1.01 लाख वोट प्राप्त किए। ऐसे में भाजपा ने 61788 वोट प्राप्त करने वाली सपा को चारों खाने चित कर दिया।

फूलपुर उपचुनाव

भाजपा की जीत की हैट्रिक

दीपक पटेल ने सपा को हराकर मारी बाजी

फूलपुर विधानसभा उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार दीपक पटेल ने बाजी मार ली है। उन्होंने सपा उम्मीदवार मुज्तबा सिद्दीकी को करीब 11305 वोटों से हराया है। बता दें कि पहले राउंड में बढ़त बनाने के बाद सपा दूसरे राउंड में पिछड़ गई। उसके बाद से उनकी वापसी नहीं हो सकी। हालांकि वह भाजपा उम्मीदवार के करीब-करीब रही लेकिन आगे नहीं जा सकी। थोड़े-थोड़े अंतर से सपा लगातार पिछड़ती चली गई। फूलपुर विधानसभा उपचुनाव में भाजपा के उम्मीदवार दीपक पटेल को 78289 मत, सपा प्रत्याशी मुज्तबा सिद्दीकी को 66984 मत और बसपा प्रत्याशी जितेंद्र सिंह को 20342 मत मिले हैं।

करहल विधानसभा क्षेत्र

तेज प्रताप बने करहल के नए किंग

फूफा को हराकर तेज प्रताप यादव बने विधायक

मैनपुरी जिले की करहल सीट पर सपा ने अपना कब्जा बरकरार रखा है। यहां से एक बार फिर तेज प्रताप यादव अपने फूफा अनुजेस यादव को 14725 वोटो से पराजित किया है। करहल सीट पर समाजवादी पार्टी ने लगातार पांचवीं बार अपनी जीत दर्ज की है। बुधवार को इस सीट पर 54.1 फीसदी मतदान हुआ था। इस सीट पर सपा से तेज प्रताप यादव बीजेपी से सेफई घराने के दामाद अनुजेश यादव तथा बसपा से डॉ. अवनीश शॉक्य चुनाव मैदान में थे। लेकिन जंग सिर्फ फूफा और भतीजे के बीच हुई।

भाजपा ने झोंकी थी पूरी ताकत

भाजपा इस बार सपा के इस गढ़ को ढहाने के दावों के साथ पूरी ताकत झोंकी थी। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक को सीट का जिम्मा सौंपा गया था और उनके साथ पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह, उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, राज्यमंत्री अजीत पाल को लगाया गया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने चुनाव की घोषणा से पहले करहल क्षेत्र में कार्यक्रम किए थे। प्रचार के दौरान मुख्यमंत्री ने घिरोर विधानसभा क्षेत्र में जनसभा की थी।

गढ़ बचाने जुट गया था पूरा सैफई परिवार

दूसरी तरफ अपने गढ़ को बचाने के लिए सांसद डिंपल यादव सहित पूरा सैफई परिवार प्रचार में जुटा रहा था। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने भी घिरोर क्षेत्र में जनसभा की थी। चुनाव के दौरान सैफई परिवार और उनके रिश्तेदार के बीच का मुकाबला चर्चा का केंद्र बना रहा। भाजपा यादव मतों में सेंधमारी के साथ अन्य जातीय मतों की गोलबंदी की रणनीति पर काम कर रही थी। परंतु उनकी यह कोशिश कामयाब नहीं हुई। यादव मतों में मामूली सेंधमारी दिखा, जो बेअसर रही।

गाजियाबाद शहर विधानसभा

बीजेपी को 69351 वोटों से जीत

अपनों के बीच पहुंच बनाने में सपा-कांग्रेस गठबंधन नाकाम

गाजियाबाद शहर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा ने सपा प्रत्याशी सिंहराज जाटव को 69351 वोट से हरा दिया। संजीव शर्मा को कुल 96946 वोट मिले हैं, जबकि सपा प्रत्याशी को 27595 वोट हासिल हुए। तीसरे स्थान पर रहे बसपा प्रत्याशी परमानंद गर्ग को 10736 वोट से संतोष करना पड़ा। 26 राउंड तक चली मतगणना में संजीव शर्मा शुरू से ही बढ़त बनाए हुए थे। विधानसभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का गठबंधन का उम्मीद से परे बेहद खराब प्रदर्शन रहा। कम मतदान के बावजूद रिकार्ड मतों से गठबंधन प्रत्याशी की हार का नतीजा चौंकाने वाला रहा। इस हार के बाद गठबंधन की चुनावी रणनीति से जुड़े कई पहलुओं पर सवाल उठ खड़े हुए हैं। राजनीतिक गलियारे में यह बात पहले से ही तैर रही है कि सपा और कांग्रेस का गठबंधन अपने पारंपरिक वोट बैंक में भी प्रभावी पहुंच बनाने में नाकाम रहा, जिसका नतीजा बड़ी हार के रूप में सामने आया। गाजियाबाद विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में सपा मुखिया अखिलेश यादव ने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से संवाद स्थापित करने के लिए एक कार्यक्रम किया, जिसमें उन्होंने पार्टी पदाधिकारियों की जिम्मेदारी तय करते हुए हर बूथ जीतने का मंत्र दिया और पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) को साधने के लिए उनकी दुखती नब्ज पर भी हाथ रखा।

शहरी मतादाताओं तक पहुंच बनाने में नाकाम

गठबंधन प्रत्याशी शहर के अधिकांश मतदाताओं तक पहुंच बनाने में नाकाम रहा। इसके मुकाबले, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रोड शो से लेकर तीन बड़े चुनावी कार्यक्रमों में हिस्सा लिया और पार्टी कार्यकर्ताओं में जोश भरा। सपा और कांग्रेस गठबंधन ने अपनी चुनावी रणनीति में जहां तमाम कमजोरी छोड़ी।

भाजपा ने संगठन स्तर पर बनाई मजबूत पैठ

वहीं, भाजपा ने संगठन के स्तर पर मजबूत आधार तैयार कर मतदाताओं के बीच अपनी पैठ को और गहरा किया। इसी रणनीति के तहत भाजपा प्रत्याशी ने रिकार्ड मतों से जीत दर्ज की। हालांकि, चुनाव परिणाम से पहले राजनीतिक गलियारों में यह बात आम थी कि भाजपा 35 से 40 हजार मतों से जीत दर्ज करेगी, लेकिन यह अंतर 70 हजार तक पहुंचेंगे इसका किसी को अंदाजा नहीं था।

सीसामऊ सीट

सीसामऊ विधानसभा क्षेत्र के उप चुनाव में गलत प्रत्याशी चयन और सुरेश अवस्थी का रूखा व्यवहार आखिरकार भाजपा को ले डूबा। वहीं नसीम सोलंकी ने विपरीत परिस्थितियों में भी 8,629 वोटों से जीत हासिल कर पति इरफान सोलंकी की सीट को बचा लिया। अपने मजबूत गढ़ में समाजवादी पार्टी ने जहां लगातार चौथी जीत हासिल की वहीं भाजपा लगातार छठी बार यह सीट हार गई है। सुरेश अवस्थी इसी सीट पर दूसरी बार और लगातार तीसरी बार विधानसभा चुनाव हारे हैं।

मझवां विधानसभा

सुचिस्मिता मौर्य फिर से बनीं मझवां की विधायक

ज्योति बिंद को 4896 मतों से हराया

मझवां विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी शुचिस्मिता मौर्य ने शानदार जीत हासिल की है। उन्होंने अपनी प्रतिद्वंदी सपा प्रत्याशी डॉ. ज्योति बिंद को 4,936 वोटों से हराया। चुनाव परिणामों ने मझवां में भाजपा समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ा दी है, और जश्न का माहौल है। मतगणना शनिवार की सुबह 8 बजे से शुरू हुई थी, और पहले ही राउंड से भाजपा प्रत्याशी शुचिस्मिता मौर्य ने बढ़त बना ली थी। शुरुआती दौर में ही यह साफ हो गया था कि शुचिस्मिता मौर्य की स्थिति मजबूत है। हालांकि, 13वें राउंड से लेकर 23वें राउंड तक वोटों का अंतर कम होता दिखा, लेकिन अंतिम राउंड तक शुचिस्मिता मौर्य ने अपनी बढ़त बनाए रखी। शुचिस्मिता मौर्य ने कुल 77,503 वोट प्राप्त किए, जबकि सपा की डॉ. ज्योति बिंद को 72,567 वोट मिले। इस प्रकार भाजपा प्रत्याशी ने सपा प्रत्याशी को 4,936 वोटों से हराया। बसपा प्रत्याशी दीपु तिवारी को इस चुनाव में 34,800 वोट मिले, जो तीसरे स्थान पर रहे।

यशस्वी-राहुल के बीच रिकॉर्ड साझेदारी

भारत की लीड 218 रन, ऑस्ट्रेलिया 104 पर सिमटा

एजेंसी । पर्थ

भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ टेस्ट में अपनी पकड़ मजबूत कर ली। भारत ने दूसरे दिन स्टम्प्स तक अपनी दूसरी पारी में बिना विकेट गंवाए 172 रन बनाए। भारत ने 150 रन के जवाब में ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में 104 रन पर ऑल आउट कर दिया था। इस तरह टीम इंडिया ने 46 रन की लीड हासिल की थी जो अब बढ़कर 218 रन हो गई है। दूसरे दिन यशस्वी जायसवाल 90 और केएल राहुल 62 रन पर नाबाद लौटे। दोनों के बीच 346 गेंद में पहले विकेट के लिए 172 रन की साझेदारी हो चुकी है।

बुमराह ने सबसे अधिक 5 विकेट लिए

भारत की तरफ से जसप्रीत बुमराह ने सबसे अधिक 5 विकेट लिए हैं और हर्षित राणा के खाते में 3 विकेट आए। दूसरे दिन जसप्रीत बुमराह के पहले ही ओवर में ऑस्ट्रेलिया ने विकेटकीपर एलेक्स कैरी का विकेट गंवा दिया था। कैरी 31 गेंद में 21 रन बनाकर आउट हो गए। इसके साथ ही बुमराह ने पांच विकेट पूरे किए। उन्होंने 11वीं टेस्ट की पारी में 5 विकेट लेने का कारनामा किया।

बुमराह ने की कपिल देव की पारी

वहीं मैच के दूसरे भारतीय टीम के कार्यवाहक कप्तान जसप्रीत बुमराह ने शानदार प्रदर्शन किया और पहली पारी में 30 रन देकर 5 विकेट लिए. बुमराह के टेस्ट करियर का ये 11वां पांच विकेट हॉल रहा, जिसमें 7 तो SENA (साउथ अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) देशों में आए हैं. वो SENA देशों में टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा पांच विकेट हॉल लेने वाले भारतीय गेंदबाजों की सूची में संयुक्त रूप से टॉप पर आ गए हैं. पूर्व भारतीय कप्तान कपिल देव ने भी SENA देशों में 7 मौकों पर पारी में पांच या उससे ज्यादा विकेट लिए थे. बुमराह ऐसे पांचवें भारतीय कप्तान हैं जिन्होंने टेस्ट पारी में पांच या उससे ज्यादा विकेट चटकाए. बुमराह से पहले वीनू मांकड़, बिशन सिंह बेदी, कपिल देव और अनिल कुंबले ही ऐसा कर सके थे.

टेस्ट में एक कैलेंडर ईयर में सर्वाधिक छक्के

33	ब्रैंडन मैक्कुलम (2014)
33	यशस्वी जायसवाल (2024)*
26	बेन स्टोक्स (2022)
22	एडम गिलक्रिस्ट (2005)
22	वीरेंद्र सहवाग (2008)

यशस्वी ने 90 रन बनाए

यशस्वी ने 193 गेंद में 7 चौके और 2 छक्कों की मदद से 90 रन बनाए हैं। ये उनका ऑस्ट्रेलिया में पहला अर्धशतक है। वहीं, केएल राहुल ने 153 गेंद खेली और 4 चौकों की मदद से 62 रन जोड़े। इससे पहले, पर्थ टेस्ट के दूसरे दिन शनिवार को ऑस्ट्रेलिया ने 67/7 रन के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया था लेकिन 37 रन जोड़ने में आखिरी तीन विकेट गंवा दिए। आखिरी विकेट के लिए जोश हेजलवुड और मिचेल स्टार्क के बीच 25 रन की साझेदारी हुई। अकेले स्टार्क ने 100 से अधिक गेंद खेली।

यशस्वी जायसवाल ने बनाया छक्कों का महारिकॉर्ड

पर्थ टेस्ट के दूसरे दिन यशस्वी जायसवाल एक टेस्ट कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बन गए. यशस्वी ने इस साल अब तक टेस्ट क्रिकेट में 34 छक्के लगाए हैं. यशस्वी ने कीवी दिग्गज ब्रैंडन मैक्कुलम को पछाड़ दिया. ब्रैंडन मैक्कुलम ने साल 2014 में टेस्ट मैचों में कुल 33 छक्के लगाए थे. बेन स्टोक्स, वीरेंद्र सहवाग और एडम गिलक्रिस्ट तो यशस्वी से इस मामले में काफी पीछे हैं.

पंत को 25 करोड़ से अधिक मिल सकते हैं : सुरेश रैना

एजेंसी । कोलकाता

भारत के पूर्व बल्लेबाज सुरेश रैना का मानना है कि रविवार को जेद्दा में होने वाली आईपीएल की मेगा नीलामी में विकेटकीपर बल्लेबाज सुरेश रैना को 25 करोड़ रुपये से अधिक मिल सकते हैं क्योंकि उनके 'एक्स फैक्टर' को देखते हुए टीमों के बीच उनके लिये होड़ मचने वाली है। कोलकाता नाइट राइडर्स ने आईपीएल 2024 से पहले आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क पर 24.75 करोड़ रूपये खर्च किये थे जो टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे बड़ी रकम है।

नामधारी एफसी ने दिल्ली एफसी से गोलरहित ड्रॉ खेला

एजेंसी । श्री भैनी साहिब

नामधारी एफसी ने शनिवार को यहां आई लीग मुकाबले में 30 मिनट तक 10 खिलाड़ियों के साथ खेलने के बावजूद दिल्ली एफसी को गोलरहित ड्रॉ पर रोका। दिल्ली एफसी को गोल करने के कई मौके मिले लेकिन टीम इनका फायदा नहीं उठा सकी। नामधारी एफसी ने दबदबा बनाया हुआ था लेकिन 61वें मिनट में उसे करारा झटका लगा जब एडो को दिल्ली के समीर बिनोंग को गिराने के कारण लाल कार्ड दिखाया गया।

तिलक वर्मा ने लगाई शतकों की हैट्रिक

टी20 के बने यूनिवर्स बॉस

एजेंसी । हैदराबाद

तिलक वर्मा ने सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी में शतक ठोक इतिहास रच दिया। तिलक टी20 क्रिकेट में लगातार 3 पारियों में शतक लगाने वाले पहले खिलाड़ी बने हैं। उन्होंने हैदराबाद की तरफ से खेलते हुए मेघालय के खिलाफ पहले मैच में 67 गेंद में 151 रन की पारी खेली। 22 साल के तिलक वर्मा लगातार दो शतक ठोक सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी में उतरे थे और उन्होंने तीसरा शतक ठोक महारिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

तिलक ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ सेंचुरियन टी20 में नाबाद 107 रन बनाए थे और फिर अगले ही मुकाबले में नाबाद 120 रन ठोके थे। इसके बाद हैदराबाद के लिए उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में शतक जमाकर इतिहास रच दिया। तिलक टी20 में 150 प्लस रन बनाने वाले पहले भारतीय पुरुष क्रिकेटर हैं।

किरण नवगिरे, जोकि महाराष्ट्र की तरफ से खेलती हैं ने सीनियर वुमेंस टी20 ट्रॉफी में नागालैंड की तरफ से खेलते हुए अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ 162 रन कूटे थे। तिलक का 151 रन का स्कोर टी20 में किसी भारतीय बल्लेबाज द्वारा बनाया गया सर्वोच्च स्कोर है। उन्होंने श्रेयस अय्यर का रिकॉर्ड तोड़ा।

226 की स्ट्राइक रेट

तिलक ने मेघालय के खिलाफ तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी की और पहले ओवर में बल्लेबाजी के लिए उतरने के बाद 226 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए। उन्होंने पारी की आखिरी गेंद पर आउट होने से पहले 14 चौके और 10 छक्के लगाए।

मुंबई के मैदानों से

आज से मुंबई घुड़दौड़ सत्र की शुरुआत

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

ऐतिहासिक महालक्ष्मी रेसकोर्स पर रविवार से मुंबई घुड़दौड़ सत्र 2024-25 की शुरुआत हो रही है। कुल 37 दिनों का कार्यक्रम रखा गया है, इस दौरान 11 दिन दुधिया रोशनी में शाम को घुड़दौड़ों का आयोजन किया जाएगा। मुख्य दौड़ों में जेएसके इंडियन 1000 गिनीज रविवार, 15 दिसंबर को, एचपीएसएल इंडियन 2000 गिनीज रविवार, 22 दिसंबर को, विल्लू सी पूनावाला इंडियन ओक्स रविवार, 11 जनवरी 2025 को, एचपीएसएल इंडियन डर्बी दो जनवरी 2025 को और पूनावाला ब्रीडर्स मल्टी-मिलियन 23 फरवरी 2025 को होगी। इसके अलावा जवारे पूनावाला द्वारा प्रायोजित इंडियन रेसिंग कॉर्निवाल के तीसरे संस्करण की तारीख सत्र के आखिरी सप्ताहांत में निश्चित की गई है। सत्र के पहले दिन कुल सात दौड़ों का कार्यक्रम रखा गया है। पहली दौड़ दोपहर दो बजे आरंभ होगी। विभिन्न दौड़ों के लिए हमारे चयन इस प्रकार हैः 1- सोरेटन्टो सीक्रेट (प्र.), मालबोरो मैन (द्वि.), 2- फॉस्ट पेस (प्र.), क्रिस्टोफल (द्वि.), 3- डैश (प्र.), जेड (द्वि.), 4- ओडिसियस (प्र.), अतातुर्क (द्वि.), 5- जिप्सी सोल (प्र.), डिवाईन स्टॉर (द्वि.), 6- ड्रीम सेलर (प्र.), ऑयरिश गोल्ड (द्वि.), 7- खलीसी (प्र.), फिडातो (द्वि.), दिन का सर्वोत्तमः ड्रीम सेलर।

अंतिम चार में मानव पंचाल

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

मुंबई के मानव पंचाल ने वाशी के गौरव जयसिंघानी के विरुद्ध 43-41, 53-67, 60(30)-37, 73-91(34), 68-13, 71-0 से प्रभावी जीत दर्ज करते हुए मलबार हिल क्लब राज्य रैंकिंग स्नूकर प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अन्य क्वार्टरफाइनल के मैचों में आदित राजा ने हसन बदामी को 64(54)-13, 59(32)-23, 68-59(48), 58(30)-1 से, युधिष्ठिर जैसिंघ ने कृष्ण तोहगांवकर को 60-50, 55(40)-12, 54-27, 22-86, 18-58, 48-62, 68-34 से और सुमित आहुजा ने सुमेर मागो को 40-58, 69-26, 48-74, 76-67, 10-70, 48-47, 52-42 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई।

आईटीएफ कलबुर्गी ओपन

सुल्तानोव ने जाविया को हराया फाइनल में बोबरोव से भिड़ेंगे

एजेंसी । कलबुर्गी

सातवें वरीय भारतीय देव जाविया ने शनिवार को यहां संघर्ष किया लेकिन शीर्ष वरीय खुमोयुन सुल्तानोव को सीधे सेटों में जीत के बाद आईटीएफ कलबुर्गी ओपन के फाइनल में पहुंचने से नहीं रोक सके। उज्बेकिस्तान के सुल्तानोव भारत के खिलाड़ी देव से रैंकिंग में 450 स्थान ऊपर है। उन्होंने 7-6 (5), 6-2 से जीत दर्ज की। अब सुल्तानोव का सामना रूस के दूसरे वरीय बोगडान बोबरोव से होगा जिन्होंने दूसरे सेमीफाइनल में अमेरिका के निक चैपल को 6-3, 6-0 से मात दी।

भारत के खिलाफ आस्ट्रेलियाई वनडे टीम की कप्तान होंगी ताहलिया

एजेंसी । सिडनी

अनुभवी हरफनमौला ताहलिया मैकग्रा को भारत के खिलाफ अगले महीने होने वाली तीन मैचों की वनडे श्रृंखला के लिये नियमित कप्तान एलिसा हीली की गैर मौजूदगी में आस्ट्रेलिया की 13 सदस्यीय महिला टीम का कप्तान बनाया गया। चौतीस वर्ष की एलिसा घुटने की चोट के कारण भारत के खिलाफ पांच दिसंबर से ब्रिसबेन में शुरू हो रही श्रृंखला नहीं खेल सकेंगी । वह महिला बिग बैश लीग के आखिरी चरण में भी नहीं खेल पाई थी। दूसरा वनडे आठ दिसंबर को ब्रिसबेन में और तीसरा 11 दिसंबर को पर्थ में खेला जायेगा।

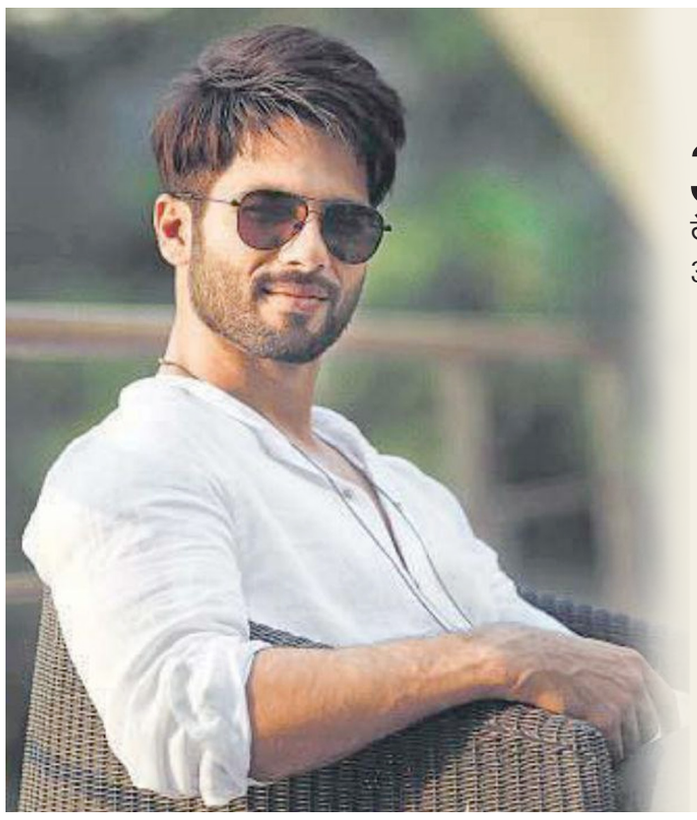

शाहिद कपूर के हाथ लगी 'कॉकटेल 2'

अभिनेता शाहिद कपूर फिल्म दर फिल्म अपने किरदारों के साथ नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। पिछली बार उन्हें 'ब्लडी डैडी' और 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' जैसी फिल्मों में देखा गया था और दोनों में ही उनका एक अलग अवतार देखने को मिला था। आने वाले दिनों में भी दर्शक अपने अलग-अलग किरदारों से दर्शकों का मनोरंजन करते दिखेंगे। अब शाहिद मशहूर निर्माता दिनेश विजान की हिट फिल्म 'कॉकटेल' के सीक्वल से भी जुड़ गए हैं।

'कॉकटेल 2' के हीरो होंगे शाहिद

साल 2012 में आई फिल्म 'कॉकटेल' का सीक्वल बन रहा है। खास बात यह है कि सीक्वल में शाहिद मुख्य भूमिका निभाने वाले हैं। अभिनेता ने भले ही अभी यह फिल्म साइन नहीं की है, लेकिन वह इसके लिए अपनी रजामंदी दे चुके हैं। मैडॉक फिल्म्स के बैनर तले बन रही इस फिल्म के जरिए शाहिद और दिनेश दूसरी बार साथ आए हैं। इससे पहले वे फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' लेकर आए थे।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि दिनेश 'कॉकटेल 2' के निर्माता होंगे। वह फिल्म 'कॉकटेल' के सह-निर्माता थे। उधर होमी अदाजानिया फिल्म में एक बार फिर निर्देशक की कुर्सी संभालेंगे। अगले साल यानी 2025 के मध्य में फिल्म की शूटिंग शुरू होगी। दिनेश और होमी सालों से 'कॉकटेल' सीक्वल पर विचार कर रहे हैं और अब उन्होंने एक ऐसी कहानी तैयार की है, जो उनके हिसाब से दोबारा पर्दे पर 'कॉकटेल' वाला जादू चलाने में कामयाब होगी।

'कॉकटेल 2' में दिखेगी नई कहानी

'कॉकटेल 2' में एक पूरी तरह से नई कहानी दिखाई जाएगी, लेकिन इसकी भावना मूल फिल्म की तरह ही होगी। शाहिद को फिल्म की कहानी बेहद पसंद आई। फिल्म के लिए कई युवा अभिनेत्रियों के साथ चर्चा चल रही है। इससे पहले दिनेश ने कार्तिक आर्यन और सारा अली खान के साथ 'लव आजकल' का सीक्वल बनाया था, जो बुरी तरह फ्लॉप रहा। हालांकि, अब निर्माता वो पुरानी गलतियां दोहराना नहीं चाहते और बड़ी सूझ-बूझ से आगे बढ़ रहे हैं।

आजाद पक्षी की तरह उड़ें: शिवकार्तिकेयन

शिवकार्तिकेयन इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म अमरण की सफलता का आनंद ले रहे हैं। गोवा में आयोजित भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में उन्होंने हिस्सा लिया, जहां उन्होंने अभिनेता एवं राजनेता खुशबू सुंदर के साथ बातचीत की और अपने जीवन, करियर और प्रेरणाओं का जिक्र किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि लोगों को हंसाना उन्होंने सिनेमा में जाने का एक माध्यम बनाया, क्योंकि यह दर्शकों को खुशी देता है, फिर चाहे वह छोटा पर्दा हो या बड़ा। उन्होंने अपने फिल्मी सफर पर आगे कहा कि पहले वह फिल्मों में काम करने के लिए किसी भी तरह की भूमिकाएं कर लेते थे, लेकिन अब फिल्मों की कहानियां उन्हें चुनती हैं।

तय किया कॉलेज में प्रोफेसरों की नकल करने से फिल्मों तक का सफर

अमरण अभिनेता ने कहा कि सिनेमा शुरू से ही उनका जुनून रहा है और वह हमेशा से ही दर्शकों का मनोरंजन करना चाहते थे। इस वजह से उन्होंने टीवी एंकर के तौर पर शुरुआत की। उन्होंने कहा, 'मैंने टेलीविजन एंकरिंग से शुरुआत की, जिसने मुझे मनोरंजन के क्षेत्र में अपना करियर बनाने का मौका दिया और इसे मैंने पूरे जुनून के साथ अपनाया।' एक मिमिक्री कलाकार के रूप में अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए अभिनेता ने बताया कि वो अपने इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रोफेसरों की नकल करते थे। इसके बाद में, जब उन्होंने उनसे माफी मांगी, तो उन्होंने अभिनेता को प्रोत्साहित किया कि वह इस प्रतिभा को सही तरीके से इस्तेमाल करें।

एक समय डिप्रेशन में जा चुके थे शिवकार्तिकेयन

इस बातचीत के दौरान अभिनेता ने अपने पिता के असामयिक निधन को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा कि पिता को खोना उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। अभिनेता ने कहा, 'मेरे पिता के निधन के बाद, मैं लभग डिप्रेशन में जा चुका था। मेरे काम ने मुझे इससे बाहर निकाला और मेरे दर्शकों की सीटियां और तालियां ही मेरी थेरेपी बन गईं।' इस बातचीत के दौरान अभिनेता ने आगे कहा कि वह हमेशा से ही लाखों लोगों के बीच अलग दिखना चाहते थे, उनका जीवन भी बाधाओं से भरा रहा है। एक वक्त पर उन्हें लगा कि वह हार मान लें, लेकिन दर्शकों के प्यार ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

छोटे पर्दे पर लौट रहा सीआईडी

बचपन का पसंदीदा शो 'सीआईडी' अपने दूसरे सीजन के साथ वापसी के लिए तैयार है। शो के प्रशंसक जश्न मना सकते हैं क्योंकि निर्माताओं ने दूसरे सीजन 'सीआईडी 2' की रिलीज की तारीख का खुलासा कर दिया है। निर्माताओं ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक आकर्षक ट्रेलर भी साझा किया। 'सीआईडी 2' में एसीपी प्रद्युम्न के रूप में शिवाजी साटम, दया के रूप में दयानंद शेट्टी और अभिजीत के रूप में आदित्य श्रीवास्तव हैं। आइए जान लेते हैं कि आप शो का लुत्फ कब और कहां और किस समय उठा सकेंगे-

चैनल ने उठाया रिलीज की तारीख से पर्दा

दो दशकों से अधिक समय तक दर्शकों को बांधे रखने के बाद 'सीआईडी' की टीम जल्द स्क्रीन पर वापस लौटेगी। सोनी टीवी ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर क्राइम थ्रिलर शो की प्रीमियर की तारीख और समय की घोषणा कर दी है। 'सीआईडी 2' 1 दिसंबर, 2024 को हमारी स्क्रीन पर वापस आने के लिए तैयार है। सोनी टीवी पर हर शनिवार और रविवार रात 10 बजे आप इस शो का लुत्फ उठा सकेंगे। वहीं, इसका धमाकेदार प्रोमो प्रशंसकों के उत्साह को चरम पर पहुंचा रहा है।

रिलीज की घोषणा से उत्साहित प्रशंसक

पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, प्रशंसकों ने अपनी खुशी साझा की। एक यूजर ने लिखा, 'और वे वापस आ गए हैं। वे हमारे बचपन को वापस ले आए हैं। एक अन्य ने लिखा की, 'मैं शो के लिए इंतजार नहीं कर सकता। सीआईडी हमारा पसंदीदा शो था और हमें खुशी है कि चैनल ने एक और एक्शन से भरपूर सीजन पेश किया है। छह साल बहुत लंबा था।'

'पटियाला पेग' विवाद पर दिलजीत दोसांझ ने सरकार को दिया ओपन चैलेंज

मशहूर सिंगर दिलजीत दोसांझ इन दिनों भारत के अलग-अलग जगहों पर म्यूजिकल कॉन्सर्ट कर रहे हैं। कुछ दिनों पहले उन्होंने हैदराबाद में अपना लाइव कॉन्सर्ट किया था जिसको लेकर तलंगाना सरकार ने उन्हें नोटिस जारी करते हुए हिदायत दी थी कि वे अपने गानों में शराब, ड्रग्स और हिंसा वाले गाने न गाएं। खासरकर उनके पंज तारा और पटियाला पेग गाने पर आपत्ति जताई थी। अब दिलजीत ने इसपर रिएक्शन दिया है।

'शराब' विवाद पर बोले दिलजीत

दिलजीत ने अपने हाल ही में लखनऊ कॉन्सर्ट में इस विवाद पर बात करते हुए सरकार को ओपन चैलेंज किया है। उन्होंने कहा कि सिंगर्स के गानों पर सेंसरशिप लगाने की बात आती है तो फिर भारतीय सिनेमा पर भी ये लागू होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इंडियन सिनेमा में कई एक्टर्स हैं जिन्होंने शराब पर सीने और गाने किए होंगे लेकिन उनपर सेंसरशिप नहीं है।

उन्होंने अपने लाइव कॉन्सर्ट में कहा- 'काफी दिनों से ये बातें चल रही हैं कि दिलजीत वर्सेस ये और वो... मैं एक बात क्लीयर करना चाहता हूं कि ये मुकाबला कुछ नहीं है, मैं आप सभी से प्यार करता हूं। मैंने जबसे इंडिया टूर शुरू किया है, चाहे वो दिल्ली हो, जयपुर, हैदराबाद, अहमदाबाद और अब लखनऊ... सब बहुत ही प्यारे लोग हैं और मुझे बहुत प्यार दिया।

मीडिया में लोग मुझे चैलेंज दे रहे हैं कि दिलजीत शराब के बिना अपना गाना हिट करा के दिखाए। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मेरे बहुत सारे गाने हैं जो 'पटियाला पेग' से ज्यादा सुने जाते हैं और प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम करते हैं। तो यहां आपको चैलेंज बेकार हो गया क्योंकि ये गाने पटियाला पेग से ज्यादा हिट हैं।

उपचुनावों में बीजेपी की बंपर विजय

46 में से 20 सीटें भाजपा, 7 कांग्रेस ने जीती

एजेंसी | नई दिल्ली

देश के 13 राज्यों की 46 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में 20 सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की जबकि कांग्रेस के खाते में 7 सीटें आई हैं। तृणमूल कांग्रेस ने पश्चिमी बंगाल की सभी छह सीटों पर जीत दर्ज की है।

पंजाब में आप का जलवा

पंजाब में चार सीटों पर हुए उपचुनाव में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी ने तीन सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस ने एक सीट पर जीत हासिल की। आम आदमी पार्टी गिद्दड़बाहा, डेरा बाबा नानक और चब्बेवाल विधानसभा सीटों पर जीती जबकि कांग्रेस उम्मीदवार कुलदीप सिंह ढिल्लों ने बरनाला विधानसभा क्षेत्र में जीत हासिल की। पंजाब के उपचुनाव में भाजपा को एक भी सीट नहीं मिली और उसके उम्मीदवार चारों सीटों पर तीसरे स्थान पर रहे। शिरोमणि अकाली दल ने उपचुनाव से खुद को दूर रखा था। इस जीत के साथ ही 117 सदस्यीय विधानसभा में आप के पास 94 सीटें और कांग्रेस के पास 16 सीटें हो जाएंगी। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पंजाब उपचुनाव में चार में से तीन सीटों पर जीत को 'सेमीफाइनल' करार देते हुए कहा कि पार्टी दिल्ली में एक बार फिर ऐतिहासिक जनादेश की ओर बढ़ रही है।

बिहार में एनडीए की जीत

बिहार में सत्तारूढ़ एनडीए ने चारों विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनावों में जीत हासिल की। बिहार में दो सीटें भाजपा और एक-एक सीट हिंदुस्तान आवाम मोर्चा (सेकुलर) और जेडीयू ने जीती। इमामगंज, तरारी, रामगढ़ और बेलागंज पर जीत दर्ज कर अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले एनडीए ने बढ़त बना ली है। आरजेडी को बड़ा सबसे बड़ा झटका बेलागंज में लगा। यह सीट पार्टी 1990 से जीतती आ रही थी, लेकिन इस बार जेडीयू से हार गई। आरजेडी को रामगढ़ में भी करारी हार का सामना करना पड़ा।

उत्तर प्रदेश में बम बम बीजेपी

उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा ने नौ सीटों में से छह सीटों पर जीत दर्ज की जबकि मीरापुर सीट भाजपा की सहयोगी राष्ट्रीय लोकदल के खाते में गई है। भाजपा ने गाजियाबाद, खैर, कुंदरकी, फूलपुर, कटेहरी और मझवान सीटों पर जीत हासिल की। यूपी में समाजवादी पार्टी केवल दो सीटें करहल और सीसामऊ जीतने में कामयाब रही है जबकि मुरादाबाद जिले में कुंदरकी जैसे मजबूत गढ़ में सपा की जमानत जब्त हो गई। भाजपा ने 31 साल बाद यह सीट करीब 1.43 लाख वोटों से जीती है। वहां करीब 80 फीसदी वोट भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह को मिले। यूपी उपचुनावों में सपा ने पुलिस-प्रशासन पर मतदाताओं को वोट न डालने देने के आरोप लगाए थे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने जीत का श्रेय पीएम मोदी की नीतियों और निर्णयों को दिया। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा इस उपचुनाव में चुनावी राजनीति का सबसे विकृत रूप देखा। अब तो असली संघर्ष शुरू हुआ है।

पश्चिमी बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने क्लीन स्विप किया

पश्चिमी बंगाल के विधानसभा उपचुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने क्लीन स्विप करते हुए सभी छह सीटों पर जीत हासिल की। टीएमसी के शानदार प्रदर्शन पर सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि तृणमूल ने सभी छह विधानसभा सीटों पर आसानी से जीत हासिल की। भाजपा के अलावा, हमें इंडिया ब्लॉक की कांग्रेस और सीपीएम का भी सामना करना पड़ा, जिन्होंने हर सीट पर अपने उम्मीदवार खड़े किए। आरजी कर मेडिकल कॉलेज की घटना को लेकर लंबे समय से विरोध झेल रही टीएमसी ने पश्चिम बंगाल पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखी है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि उपचुनाव के परिणाम उन्हें लोगों के लिए काम करने में मदद करेंगे।

भजनलाल सरकार पहले टेस्ट में हुई पास

राजस्थान विधानसभा उपचुनाव में भाजपा ने सात में से पांच सीटें जीती जबकि कांग्रेस और भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) को एक-एक सीट मिली। खींवसर की चर्चित सीट पर हनुमान बेनीवाल की पत्नी कनिका बेनीवाल भाजपा प्रत्याशी रेवंत राम डांगा से 13 हजार से ज्यादा वोटों से हार गईं। भाजपा के राजेंद्र भांबू ने झुंझुनू, राजेंद्र गुर्जर ने देवली-उनियारा, शांता अमृत लाल मीना ने सलूंबर और सुखवंत सिंह ने रामगढ़ सीट जीती। बीएपी उम्मीदवार अनिल कुमार कटारा ने चौरासी सीट और कांग्रेस के दीन दयाल बैरवा ने दौसा सीट जीती। भाजपा ने दौसा सीट से कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल मीणा के भाई जग मोहन मीणा को मैदान में उतारा था। यह हार किरोड़ी लाल मीणा के लिए एक बड़ा झटका है।

कर्नाटक में सभी सीटों पर कांग्रेस पार्टी ने जीत हासिल की

कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस ने चन्नपटना, शिगगांव और संदूर की तीन सीटें जीतीं। केरल में, कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने पलक्कड़ विधानसभा सीट जीती, जबकि सत्तारूढ़ एलडीएफ ने चेलाक्कारा सीट पर जीत हासिल की। कर्नाटक में विधानसभा उपचुनावों के नतीजों से उत्साहित कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शनिवार को कहा कि उन्होंने 'जनता की अदालत' में जीत हासिल की है। इन तीनों सीटों पर सत्तारूढ़ कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। उन्होंने संदूर, शिगगांव और चन्नपटना में विधानसभा उपचुनावों में पार्टी की जीत का श्रेय गारंटी योजनाओं को दिया। विधानसभा उपचुनाव में जीत के बाद सीएम सिद्धारमैया ने संवाददाताओं से कहा, आप जानते हैं कि महात्मा गांधी ने क्या कहा था। उन्होंने कहा था कि जनता की अदालत अदालतों से बेहतर है। अब जनता की अदालत ने मुझे अपना फैसला सुना दिया है। उन्होंने बताया कि यह जीत कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण थी, क्योंकि भाजपा और जेडीएस ने गठबंधन किया था। 'हमने कल्याण कर्नाटक (संदूर), कित्तूर कर्नाटक क्षेत्र (शिगगांव) और पुराने मैसूर क्षेत्र (चन्नपटना) से जीत हासिल की। सभी जगहों पर हमने जीत हासिल की। इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

असम उपचुनाव: एनडीए ने लहराया परचम

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके सहयोगियों ने असम में हुए सभी पांच विधानसभा में शानदार जीत दर्ज की। शनिवार को मतगणना पूरी हुई, जिसमें भाजपा और उसके गठबंधन के उम्मीदवारों ने बड़े अंतर से जीत हासिल की। समागुरी में ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए, भाजपा ने कांग्रेस के गढ़ में सेंधमारी की। जीत से पार्टी के नेतृत्व में खुशी की लहर दौड़ गई। असम में पांचों विधानसभा उपचुनाव में शानदार जीत के लिए अमस के मुख्यमंत्री ने लोगों का आभार जताया है। मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने इसे अच्छे शासन और विकास के प्रति लोगों के समर्थन का प्रमाण बताया। बिहाली में, भाजपा ने सीट बरकरार रखते हुए दिगंत घाटोवाल ने 50,947 वोट प्राप्त किए, जबकि जयंत बोरा ने 41,896 वोट हासिल किए। इस सीट पर 2021 में भजपा के रंजीत दत्ता ने जीत हासिल की थी। वे तेजपुर लोकसभा सीट से निर्वाचित होने के बाद यह सीट खाली हुई थी। असम गण परिषद ने बोंगईगांव विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में बड़ी जीत हासिल की है। पार्टी की प्रत्याशी दीप्तिमयी चौधरी ने कांग्रेस उम्मीदवार ब्रजेंजीत सिंह को 35164 वोटों के भारी अंतर से हराया है। असम के सिदली विधानसभा सीट से यूपीपीएल के उम्मीदवार निर्मल कुमार ब्रह्मा ने जीत हासिल की। यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी, लिबरल के उम्मीदवा ब्रह्मा ने 37,016 वोटों से जीत दर्ज की। उन्होंने बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट के सुबोध कुमार को हराया। ब्रह्मा को 95,243 वोट मिले, जबकि बसुमतरी को 58,227 वोट मिले। ढोलाई में, भाजपा के निहार रंजन दास ने 9,344 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। पार्टी कार्यकर्ताओं ने दिल्ली कार्यालय और स्थानीय पार्टी केंद्रों पर खुशी मनाते हुए आतिशबाजी की। समागुरी में ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए, भाजपा ने कांग्रेस के गढ़ में सेंधमारी की। भाजपा के डिप्लू रंजन सरमा ने 26,200 वोटों के अंतर से सीट जीती, जो भाजपा के पारंपरिक कांग्रेस गढ़ों में बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है। डिप्लू रंजन सरमा ने समागुरी के लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा, यह जीत लोगों की है। हम इस क्षेत्र में विकास और समृद्धि लाने के लिए कठिन मेहनत करेंगे।

अन्य राज्यों का हाल

मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने विजयपुर और भाजपा ने बुधनी सीट जीत ली। छत्तीसगढ़ में भाजपा उम्मीदवार सुनील कुमार सोनी ने रायपुर सिटी साउथ सीट पर जीत दर्ज की। गुजरात की एक सीट भाजपा के खाते में गई है। मेघालय में सत्तारूढ़ नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) की उम्मीदवार और मुख्यमंत्री की पत्नी मेहताब चांडी अगितोक संगमा ने गम्बेग्रे उपचुनाव जीत लिया।

लोकसभा के नतीजे: वायनाड लोकसभा सीट

प्रचंड पदार्पण

दक्षिण की सियासत में राहुल की विरासत संभालेंगी प्रियंका

- वायनाड से शानदार जीत के साथ लोकसभा पहुंचीं
- संसद में इंडिया गठबंधन को मिला मजबूत वक्ता

एजेंसी | वायनाड

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा केरल की वायनाड सीट से शानदार जीत के साथ लोकसभा पहुंच चुकी हैं। यह पहला मौका होगा, जब गांधी परिवार के तीन सदस्य एक साथ संसद में होंगे। प्रियंका अपनी दादी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, मां सोनिया गांधी, चाची मेनका गांधी के बाद गांधी परिवार की चौथी महिला सदस्य हैं, जो संसद पहुंचीं हैं। इसके साथ ही वह दक्षिण भारत से जीत दर्ज कर संसद पहुंचने वाली इस परिवार की चौथी सदस्य बन गई हैं। पार्टी के रणनीतिकार मानते हैं कि वायनाड से जीत के बाद प्रियंका का दक्षिण की राजनीति में कद बढ़ जाएगा।

गांधी परिवार की दक्षिण की जीत

इंदिरा गांधी 1978 (चिकमंगलूू, कर्नाटक), 1980 (मेडक, आंध्र प्रदेश)

सोनिया गांधी 1999 (बेल्लारी, कर्नाटक)

राहुल गांधी 2019 और 2024 (वायनाड, केरल)

प्रियंका गांधी 2024 (वायनाड, केरल)

राहुल को ताकत मिलेगी

प्रियंका ऐसे वक्त संसद पहुंची हैं, जब कांग्रेस विधानसभा चुनावों में मुश्किल दौर से गुजर रही है। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र चुनाव में हार से पार्टी की रणनीति पर सवाल उठ रहे हैं। ऐसे में प्रियंका की मौजूदगी लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के लिए एक बड़ी ताकत साबित होगी। पिछले कुछ वर्षों में राहुल अकेले संसद के अंदर और बाहर केंद्र सरकार पर सीधा निशाना साधते रहे हैं। प्रियंका के रूप में राहुल को ताकत मिलेगी।

अंदरूनी सियासत पर पड़ेगा असर

प्रियंका की शानदार जीत का फायदा पार्टी को 2026 के केरल विधानसभा चुनाव में मिल सकता है। केरल की सियासत में उनकी मौजूदगी यूडीएफ को मजबूत करेगी। इसका असर पार्टी की अंदरूनी सियासत पर भी पड़ेगा। इसके अलावा अन्य चुनावों में भी कांग्रेस को लाभ मिल सकता है। पर, ऐसा भी संभव है कि उनके संसद पहुंचने से कांग्रेस को नुकसान उठाना पड़े। सत्ता पक्ष को परिवारवाद के मुद्दे पर एक बार फिर कांग्रेस को घेरने का मौका मिल जाएगा। हालांकि, कांग्रेस के रणनीतिकार मानते हैं कि परिवारवाद अब कोई मुद्दा नहीं रहा है।

इंडिया गठबंधन के पास हिंदी में मजबूती से अपनी बात रखने वाले वक्ताओं की कमी

संसद के अंदर इंडिया गठबंधन के पास हिंदी में मजबूती से अपनी बात रखने वाले वक्ताओं की कमी है। प्रियंका इस कमी को पूरा कर सकती हैं। इसके साथ ही प्रियंका अपने करिश्मे, राजनीतिक कौशल और जनता से प्रभावी ढंग से जुड़ने की क्षमता का लाभ उठाते हुए भाजपा के लिए एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी के तौर पर उभर सकती है। इससे पार्टी के अंदर उनकी स्थिति मजबूत होगी और राजनीतिक तौर पर कांग्रेस को भी लाभ मिलेगा। प्रियंका अगले सप्ताह लोकसभा की सदस्यता की शपथ लेंगी।

नांदेड़ लोकसभा सीट पर बड़ा उलटफेर

आखिरी दौर की काउंटिंग में जीती कांग्रेस

नांदेड़ लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस ने जीत दर्ज कर ली है। मतगणना के अंतिम कुछ चरणों में कांग्रेस उम्मीदवार रविंद्र चव्हाण ने वापसी करते हुए बीजेपी उम्मीदवार संतुकराव हंबर्डे को 1457 वोटों के अंतर से हरा दिया। बीजेपी प्रत्याशी शाम 4 बजे तक 35000 वोटों से कांग्रेस उम्मीदवार पर बढ़त बनाए हुए थे, लेकिन आखिरी के कुछ राउंड में बाजी पलट गई और कड़े मुकाबले में रविंद्र चव्हाण ने कांग्रेस के लिए नांदेड़ लोकसभा सीट बरकरार रखी। उन्हें 586788 वोट मिले, जबकि बीजेपी प्रत्या हंबर्डे को 585331 वोट प्राप्त हुए। बता दें कि उनके पिता वसंतराव चव्हाण ने 2024 के लोकसभा चुनावों में नांदेड़ सीट से कांग्रेस के टिकट पर जीत हासिल की थी। लेकिन उनके असामयिक निधन के कारण यहां उपचुनाव की जरूरत पड़ी। वंचित बहुजन अघाड़ी तीसरे स्थान पर रही। उसके उम्मीदवार अविनाश विश्वनाथ भोसिकर को 80179 वोट मिले।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति के शानदार प्रदर्शन के बाद दिल्ली बीजेपी हेडक्वार्टर में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नांदेड़ लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव का भी जिक्र किया। लेकिन उन्होंने गलती से यह दावा कर दिया कि नांदेड़ में जीत के साथ महाराष्ट्र में बीजेपी के लोकसभा सीटों का आंकड़ा 9 से बढ़कर 10 हो गया है। इलेक्शन कमीशन की वेबसाइट पर पीएम मोदी की स्पीच के कुछ देर बाद नांदेड़ उपचुनाव का फाइनल रिजल्ट रिफ्लेक्ट हुआ, जिसमें कांग्रेस को 1457 वोटों से विजयी घोषित किया गया। दिलचस्प बात ये है कि नांदेड़ लोकसभा की दोनों विधानसभा सीटों- नांदेड़ नॉर्थ और नांदेड़ साउथ में महायुति की जीत हुई है। दोनों विधानसभा सीटों पर शिंदे गुट की शिवसेना ने जीत दर्ज की। बता दें कि लोकसभा चुनावों में महाराष्ट्र में महायुति को झटका लगा था और महा विकास अघाड़ी ने 48 में से 31 सीटों पर जीत हासिल की थी।

कांग्रेस सांसद के निधन के बाद उपचुनाव

नांदेड़ लोकसभा सीट पर यह उपचुनाव कांग्रेस सांसद वसंतराव चव्हाण के निधन के बाद हो रहा है। अगस्त 2024 में उनके निधन के बाद यह सीट खाली हो गई थी। उन्होंने 2024 लोकसभा चुनाव में भाजपा के प्रतापराव पाटिल को करीब 60 हजार वोटों के अंतर से हराया था।